بسم الله الرحمن الرحيم

لا اله الا الله محمد رسول الله

अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपासना के योग्य नहीं मुहम्मद[स०] अल्लाह के रसूल हैं।

Vol - 24
Issue - 02

राह-ए-ईमान

फ़रवरी
2022 ई०

ज्ञान और कर्म का इस्लामी दर्पण

सम्पादक
फ़रहत अहमद आचार्य

उप सम्पादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद M.A.
इब्नुल मेहदी लईक M.A.

संपादक - मंडल
फज़ल नासिर

सेटिंग
फ़रहत अहमद आचार्य

टाइटल डिज़ाइन
इब्नुल मेहदी लईक M.A.

मैनेजर
अतहर अहमद शमीम M.A.

कार्यालय प्रभार
सय्यद हारिस अहमद

विषय सूचि

1. पवित्र क़ुरआन 2
2. पवित्र हदीस 2
3. हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की अमृतवाणी 3
4. रूहानी ख़ज़ायन (तजल्लियात-ए-इलाहिया अर्थात ख़ुदा की चमकारें) 4
5. सम्पादकीय 6
6. सारांश ख़ुत्बः जुम्अः (दिनांक 21-01-2022) 8
7. क़ुरआन-ए-मजीद की 26 आयतों पर आरोपों के उत्तर 12
8. पेशगोई मुसलेह मौऊद की पृष्ठभूमि 20
9. कुछ नादानों द्वारा किए गए ऐतराज़ों के उत्तर 24
10. सामान्य ज्ञान 28

☆ ☆ ☆

पत्र व्यवहार के लिए पता :-
सम्पादक राह-ए-ईमान, मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया भारत,
क़ादियान - 143516 ज़िला गुरदासपुर, पंजाब।
Editor Rah-e-Iman, Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat,
Qadian - 143516, Distt. Gurdaspur (Pb.)
Fax No. 01872 - 220139, **Email : rahe.imaan@gmail.com**
Editor- 9115040806, Manager- 9815639670

लेखकों के विचार से अहमदिया मुस्लिम जमाअत का सहमत होना ज़रूरी नहीं

वार्षिक मूल्यः 130 रुपए

Printed & Published by Shoaib Ahmad M.A. and owned by Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat Qadian and Printed at Fazle Umar Printing Press, Harchowal Road, Qadian Distt. Gurdaspur 143516, Punjab, INDIA and Published at Office Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat, P.O. Qadian, Distt. Gurdaspour 143516 Punjab iNDIA. Editor Farhat Ahmad

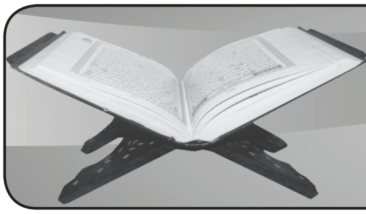

पवित्र क़ुरआन

(अल्लाह तआला के कथन)

إِنَّ الَّذِينَ يَكْفُرُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ وَيَقْتُلُونَ النَّبِيِّينَ بِغَيْرِ حَقٍّ ۙ وَيَقْتُلُونَ الَّذِينَ يَأْمُرُونَ بِالْقِسْطِ

مِنَ النَّاسِ ۙ فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ۔ أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ يُجَادِلُونَ فِي آيَاتِ اللَّهِ ۖ أَنَّىٰ يُصْرَفُونَ ۔

(सूरह (अल आले इमरान आयत- 22-23)

अनुवादः- निस्संदेह वे लोग जो अल्लाह की आयतों का इन्कार करते हैं और नबियों की अकारण सख़्त मुख़ालिफ़त (विरोध) करते हैं और लोगों में से उन की भी सख़्त मुख़ालिफ़त करते हैं जो इन्साफ़ का आदेश देते हैं तो उन्हें दर्दनाक अज़ाब की खबर दे दे। क्या तू ने ऐसे लोग नहीं देखे जो अल्लाह के निशानात के बारे में बहसें करते हैं? वे कहाँ फिराए जा रहे हैं

पवित्र हदीस

(हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कथन)

अनुवाद : - हज़रत अबू उसैद अस्सादी वर्णन करते हैं कि हम लोग आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में उपस्थित थे कि बनी सलमा का एक व्यक्ति उपस्थित हुआ और पूछने लगा कि हे अल्लाह के रसूल माता पिता की मृत्यु के बाद कोई ऐसी नेकी है जो मैं उनके लिए कर सकूं? आपने फ़रमाया- हां क्यों नहीं। तुम उनके लिए दुआ करो, उनके लिए माफी मांगा करो, उन्होंने जो वादे किसी से कर रखे थे उन्हें पूरा करो। उनके प्रिय तथा संबंधियों से उसी तरह अच्छा सुलूक और अच्छा व्यवहार करो जैसा वह अपने जीवन में उनके साथ किया करते थे और उनके दोस्तों के साथ इज़्ज़त तथा सम्मान का बर्ताव करो। (अबु दाऊद , किताबुल अदब)

अनुवाद : - हज़रत अनस बिन मालिक वर्णन करते हैं कि मैंने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को यह फ़रमाते हुए सुना कि जो व्यक्ति रिज़्क की वृद्धि चाहता है या इच्छा रखता है कि उसकी आयु और मृत्यु उपरान्त अच्छा वर्णन हो तो उसे रिश्तेदारों से अच्छा व्यवहार करना चाहिए अर्थात अपने रिश्तेदारों से बनाकर रखनी चाहिए। (मुस्लिम किताबुल बिर्र)

☆ ☆ ☆

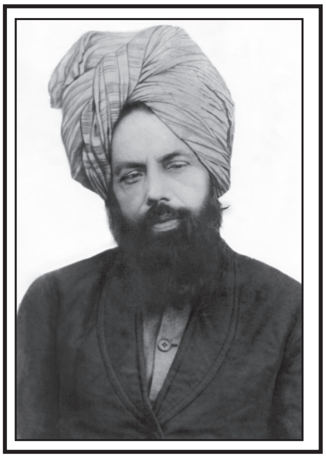

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की अमृतवाणी

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :-

सुभागी और अभागी

जुमा की नमाज़ के बाद खुली सभा में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने निम्नलिखित तक़रीर की:-

"देखो मैं मात्र ख़ुदा के लिए संक्षिप्त रूप से कुछ बातें सुनाता हूं। मेरी तबियत अच्छी नहीं और अधिक बातों की आवश्यकता नहीं है। क्योंकि वे लोग जिनको अल्लाह तआला ने नेक और स्वच्छ प्रकृति प्रदान की है और जिनकी प्रतिभाएं उत्तम हैं वे बहुत बातों के मोहताज नहीं होते और एक इशारे ही से असल अर्थ और उद्देश्य को समझ लेते हैं और बात ही हक़ीक़त को पा लेते हैं। हां जो लोग अच्छी प्रकृति और उत्तम प्रतिभा नहीं रखते और अल्लाह तआला के वजूद और उसकी ताक़त पर भरोसा नहीं है वे तो अपनी ही स्वार्थपरायणताओं के पीछे चलते हैं। वे ऐसे कूप-मंडूप में पड़े हुए हैं कि अगर सारे नबी इकट्ठा होकर नसीहत के एक ही मंच पर खड़े होकर नसीहत करें तब भी उन्हें कुछ फ़ायदा न होगा।

यही वह रहस्य है कि हर नबी और रसूल के समय में दो वर्ग होते हैं 1- एक वह जिसका नाम सईद (सुभागी अर्थात सौभाग्यशाली) रखा है और 2- दूसरा वह जो शक़ी (अभागी) कहलाता है। दोनों वर्ग उपदेशों की दृष्टि से नबियों के सामने बराबर थे और उस पवित्र गिरोह ने कभी किसी से ईर्ष्या-द्वेष नहीं किया। पूरे तौर पर नसीहत का हक़ अदा किया, जैसे सुभागियों के लिए वैसे ही अभागियों के लिए। परंतु सुभागी क़ौम कान रखती थी जिससे उसने सुना, आंखें रखती थी जिससे उसने देखा, दिल रखती थी जिससे उसने समझा लेकिन अभागियों का गिरोह एक ऐसी क़ौम थी जिसके कान न थे, जो सुनती और न आंखें थी, जिससे देखती, न दिल थे, जिससे समझती इसीलिए वह वंचित रही।

मक्का की मिट्टी एक ही थी जिससे अबू बक्र रज़िअल्लाहो अन्हों और अबू जहल पैदा हुए। मक्का वही मक्का है जहां अब करोड़ोंइन्सान हर वर्ग और हर दर्जे के दुनिया के हर कोने से जमा होते हैं। उसी मक्का में यह दोनों इन्सान पैदा हुए। जिनमें से पूर्वोक्त अपनी शिष्टता सज्जनता और सीधे-सादे होने के कारण हिदायत पाकर सिद्दीक़ों के चरमोत्कर्ष तक पहुंच गया। और दूसरा दुष्टता, मूर्खता अनावश्यक वैमनस्यता और सच्चाई की मुख़ालिफ़त में मशहूर है।

नेकी का नमूना बनो, ख़ुदा के अधिकारों का हनन न करो और बन्दों के अधिकारों का हनन न करो।" (मल्फ़ूज़ात जिल्द - 2)

☆ ☆ ☆

रूहानी ख़ज़ायन

तजल्लियात-ए-इलाहिया (ख़ुदाई चमकारें)

(हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम द्वारा लिखित)

यही कारण है कि पहले युगों में भी मूर्ख लोगों ने प्रत्येक नबी को अशुभ समझा है और अपना कर्म-दण्ड उन पर थोप दिया है, परन्तु असल बात यह है कि नबी अज़ाब को नहीं लाता अपितु अज़ाब का पात्र हो जाना समझाने के अन्तिम प्रयास को पूर्ण करने के लिए नबी को लाता है और उसके स्थापित होने के लिए आवश्यकता पैदा करता है और कठोर अज़ाब नबी के स्थापित होने के बिना आता ही नहीं। जैसा कि पवित्र क़ुर्आन में अल्लाह तआला फ़रमाता है - وَمَا كُنَّا مُعَذِّبِيْنَ حَتّٰى نَبْعَثَ رَسُوْلًا (बनी इस्राईल-16)

फिर यह क्या बात है कि एक ओर तो ताऊन देश को खा रही है और दूसरी ओर भयावह भूकम्प पीछा नहीं छोड़ते। हे लापरवाहो! तलाश तो करो शायद तुम में ख़ुदा की ओर से कोई नबी क़ायम हो गया है[1]।★ जिसे तुम झुठला रहे हो। अब हिज्री सदी का भी चौबीसवां वर्ष है। ख़ुदा के किसी रसूल के स्थापित हुए बिना तुम पर यह विपदा क्यों आ गई जो प्रतिवर्ष तुम्हारे मित्रों को तुम से पृथक करती और तुम्हारे दिलों पर पृथकता का दाग़ लगाती है। अत: कुछ बात तो है क्यों तलाश नहीं करते और तुम क्यों इस उपरोक्त कथित आयत में विचार नहीं करते जो ख़ुदा तआला फ़रमाता है - وَمَا كُنَّا مُعَذِّبِيْنَ حَتّٰى نَبْعَثَ رَسُوْلًا अर्थात् हम किसी बस्ती पर असाधारण अज़ाब नहीं उतारते जब तक हम उन पर समझाने के अन्तिम प्रयास को पूर्ण करने के लिए एक रसूल न भेज दें। अब तुम स्वयं सोच कर देख लो कि क्या यह असाधारण अज़ाब नहीं जो तुम कई वर्ष से भुगत रहे हो। तुम वे संकट देख रहे हो जिन का तुम्हारे बाप-दादों ने नाम भी नहीं सुना था तथा जिनका हज़ारों वर्ष तक इस देश में उदाहरण नहीं पाया जाता और जिस ताऊन तथा जिस भूकम्प को अब तुम देखते हो मैं अपनी कश्फ़ी अवस्था में उसे पच्चीस वर्ष से देख रहा हूं। यदि ख़ुदा ने मुझे ये समस्त ख़बरें पहले से नहीं दीं तो मैं झूठा हूं परन्तु यदि ये ख़बरें पच्चीस वर्ष से मेरी पुस्तकों में दर्ज हैं और मैं समय से पूर्व निरन्तर ख़बर[2]✲ देता रहा हूं तो तुम्हें डरना चाहिए। ऐसा न हो कि तुम ख़ुदा के आरोप के नीचे आ जाओ। तुम सुन चुके हो कि 4 अप्रैल 1905 ई. के भूकम्प की भविष्यवाणी मैंने एक वर्ष पूर्व अखबारों में प्रकाशित की थी और उसमें केवल यही शब्द नहीं था कि "ज़लज़ले का धक्का" अपितु यह इल्हाम भी था

[1]★ **हाशिया :-** नबी के शब्द से इस युग के लिए ख़ुदा तआला का अभिप्राय यह है कि कोई व्यक्ति पूर्ण रूप से ख़ुदा के वार्तालाप और सम्बोधन का सम्मान प्राप्त करे और धर्म के नवीनीकरण के लिए मामूर हो। यह नहीं कि वह कोई दूसरी शरीअत लाए क्योंकि शरीअत आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर समाप्त है और आंहज़रत सल्लल्लाहु के बाद किसी पर नबी के शब्द का चरितार्थ करना भी वैध नहीं जब तक उसको उम्मती भी न कहा जाए। जिस के मायने ये हैं कि उसने प्रत्येक इनाम आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अनुकरण से पाया न कि सीधे तौर पर। (इसी से)

✲ **हाशिया :-** इन्हीं भयंकर भूकम्पों की सूचनाएं मेरी पुस्तक बराहीन अहमदिया में आज से पच्चीस वर्ष पूर्व प्रकाशित हो चुकी हैं। (इसी से)

कि عَفَتِ الدّيَارُ مَحَلّهَا وَمقامها अर्थात् पंजाब के कुछ भागों के भवन तबाह और मिट जाएंगे। इसलिए अब मुझे इस बात के लिखने की आवश्यकता नहीं कि कितनी सफाई से वह भविष्यवाणी पूरी हो गई। तत्पश्चात् इसी अप्रैल के महीने में ख़ुदा तआला की वह्यी से यह दूसरी भविष्यवाणी मैंने प्रकाशित की थी कि जैसा कि यह भूकम्प 4 अप्रैल 1905ई. के बहार (बसन्त) के मौसम में आया, ऐसा ही एक दूसरा भूकम्प बसन्त के मौसम में ही आएगा और इस से पहले नहीं आएगा। और आवश्यक है कि 25 फरवरी 1906 ई. तक वह भूकम्प न आए। इसलिए ग्यारह महीने तक कोई भूकम्प न आया। और जब 25 फ़रवरी 1906 ई. गुज़र गई। तब 27 फ़रवरी 1906 ई. की रात को ठीक बसन्त के बीच एक बजे के लगभग एक भीषण भूकम्प आया कि अंग्रेज़ी अखबार सिविल इत्यादि को भी इक़रार करना पड़ा कि यह भूकम्प 4 अप्रैल 1905 ई. के भूकम्प के बराबर था और रामपुर शहर क्षेत्र शिमला तथा बहुत से अन्य स्थानों में प्राणों और भवनों की क्षति हुई। यह वही भूकम्प था जिसके बारे में ग्यारह महीने पूर्व ख़ुदा तआला की वह्यी ने यह खबर दी थी कि

"फिर बहार आई ख़ुदा की बात फिर पूरी हुई[3]★तो इसी के अनुसार बहार के मौसम में भूकम्प आया। अब सोच कर देख लो कि यह ख़ुदा के अतिरिक्त किस की शक्ति है कि इस स्पष्टता के साथ भविष्यवाणी कर सके। मेरे हाथ में तो पृथ्वी की परतें नहीं थीं कि मैं ग्यारह महीने तक उनको थाम रखता और फिर 25 जनवरी 1906 ई. बाद एक ज़ोर का धक्का देकर पृथ्वी को हिला देता। अत: हे प्रियजनो जब तुम ने ये दोनों भूकम्प अपनी आंखों से देख लिए तो अब तुम्हें इस बात का समझना आसान है कि भविष्य में पांच भूकम्पों की ख़बर भी कोई गप नहीं है और तुम यह भी समझ सकते हो कि जैसा कि यह विश्वास करना मानवीय शक्ति से बाहर था कि ग्यारह माह तक अप्रैल के भूकम्प के समान कोई भूकम्प नहीं आएगा अपितु ठीक बहार में 25 फ़रवरी 1906 ई. के बाद आएगा। ऐसा ही यह विश्वास करना भी मानवीय शक्ति से बाहर है कि अब इस के बाद पांच भीषण भूकम्प आएंगे जिनके द्वारा ख़ुदा तआला अपने चेहरे की चमकार दिखाएगा यहां तक कि उनको जो ख़ुदा तआला के अस्तित्व के क़ाइल नहीं इक़रार की ओर खींचेगा, तत्पश्चात् अमन हो जाएगा और एक अवधि तक ऐसे भूकम्प फिर कभी नही आएंगे।**......शेष**

(तजल्लियात-ए-इलाहिया (ख़ुदाई चमकारें) पृष्ठ 8-11)

★हाशिया :- अफ़सोस कि कुछ पक्षपाती मौलवी केवल हठधर्मी से इस खुली-खुली भविष्यवाणी पर धूल डालना चाहते हैं और लोगों को धोखा देकर यह कहते हैं कि भविष्य में आने वाले भूकम्प के बारे में तो यह लिखा गया था कि वह क़यामत का नमूना होगा परन्तु यह भूकम्प तो क़यामत का नमूना नहीं। इसके उत्तर में इसके अतिरिक्त क्या कहें कि झूठों पर ख़ुदा की लानत। मैं बारबार अपनी पुस्तकों और विज्ञापनों में यह भविष्यवाणी प्रकाशित कर चुका हूं कि कई भूकम्प आएंगे और एक क़यामत का नमूना होगा अर्थात् उसमें बहुत से प्राणों की क्षति होगी परन्तु एक भूकम्प बहार के दिनों में आया था और उसके बारे में इल्हाम यह था -"फिर बहार आई ख़ुदा की बात फिर पूरी हुई" अत: 28 फरवरी 1906 ई. का भूकम्प बिल्कुल बहार के मौसम में आया, जिस से आठ आदमी मर गए और 19 ज़ख़्मी हुए और सैकड़ों मकान गिर गए और भूकम्प के बारे में पैसा अखबार 16 मार्च 1906 ई. पृष्ठ-5, कालम-3 में लिखा है कि 28 फ़रवरी 1906ई. की रात के भूकम्प में गांव दोदापुर ज़िला, अम्बाला, तहसील जगाधरी के सारे लोग रात को सोए हुए मर गए केवल तीन आदमी बचे और ज़िला सहारनपुर में भूकम्प की रात को एक सूखा कुआं पानी से भर गया। (इसी से)

सम्पादकीय 20 फरवरी - मुस्लेह मौऊद दिवस

प्रिय पाठको ! फरवरी का महीना जमाअत अहमदिया के इतिहास में एक विशेष महत्त्व रखता है। क्योंकि इसी महीने की 20 तारीख 1886 ई को जमाअत के संस्थापक हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी मसीह मौऊद अलैहिससलाम ने दुनिया के सामने एक महान भविष्यवाणी का ऐलान किया था जिसको मुस्लेह मौऊद की भविष्यवाणी के नाम से जाना जाता है, जिसमें ख़ुदा की ओर से बहुत सी विशेषताओं से युक्त एक महान पुत्र के प्राप्त होने का वादा था। संक्षेप में भविष्यवाणी के शब्द इस प्रकार हैं -

"ख़ुदाए रहीम व करीम ने जो प्रत्येक चीज़ पर समर्थ है...मुझको अपने इलहाम (ईशवाणी) से संबोधित करके फ़र्माया कि मैं तुझे एक रहमत (कृपा) का निशान देता हूँ उसी के अनुसार जो तूने मुझसे मांगा...अत: तुझे ख़ुशख़बरी हो कि एक प्रतापी और पवित्र लड़का तुझे दिया जायेगा। एक ज़की ग़ुलाम (पवित्र लड़का) तुझे मिलेगा। वह लड़का तेरे ही बीज से तेरी ही सन्तान व कुल का होगा।.. उसको पवित्र आत्मा दी गई है और वह अशुब्धता से पवित्र है।.. वह दुनिया में आयेगा और अपने मसीही नफ़्स अर्थात् (मसीही शक्ति) और रूहुल हक़ की बर्कत से बहुतों को बीमारियों से साफ़ करेगा। वह कलिमतुल्लाह (अर्थात एकेश्वरवाद का प्रतीक) है। क्योंकि ख़ुदा की कृपा व स्वाभिमान ने उसे अपने कलिमा तम्जीद (बुज़ुर्गी व शान) से भेजा है। वह सख़्त ज़हीन व फ़हीम (बुद्धिमान एवं सूझवान) होगा और दिल का हलीम (शांत स्वभाव) और उलूमे ज़ाहिरी व बातिनी (अर्थात् सांसारिक तथा आध्यात्मिक ज्ञान) से परिपूर्ण किया जायेगा।... हम उसमें अपनी रूह (आत्मा) डालेंगे। ख़ुदा का साया उसके सिर पर होगा। वह अतिशीघ्र बढ़ेगा और असीरों (गुलामों) की आज़ादी का कारण होगा और ज़मीन के किनारों तक शोहरत (प्रसिद्धि) पाएगा और क़ौमें उससे बरकत पाऐंगी।"

इस भविष्यवाणी के तीन साल के भीतर वह पुत्र पैदा हुआ और उनका नाम मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद रखा गया। ख़ुदा ने अपने वादे के अनुसार वर्णित समस्त विशेषताओं से उनको सुशोभित किया। सन 1914 में वह जमाअत अहमदिया के दूसरे खलीफा हुए। फिर दुनिया ने देखा कि किस प्रकार ख़ुदा की भविष्यवाणी पूरी हुई। बहरहाल इसका विवरण आप पहले भी इस पत्रिका में पढ़ चुके हैं फरवरी महीने की कोई भी पत्रिका आप पढ़ेंगे तो उसमें इन महान भविष्यवाणियों के पात्र मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद के बारे में सविस्तार वर्णन मिल जाएगा। आप ही ने 1938 ई में खुद्दामुल अहमदिया के नाम से एक संस्था की बुनियाद रखी जो जमाअत के युवाओं की संस्था है। इसका मूल उद्देश्य यह था कि युवा जो देश और समाज का भविष्य तय करते हैं उनको सही राह पर चलाया जाए उनका समय समय पर सही मार्गदर्शन किया जाए ताकि युवावस्था में उनके कदम गलत रास्तों पर न चल पड़ें। युवाओं की इस संस्था के संस्थापक हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद (जमाअत के द्वितीय खलीफा) युवाओं को उपदेश करते हुए फ़रमाते हैं कि -

"मैंने निरंतर जमाअत को इस बात की तरफ़ तवज्जो दिलाई है कि क़ौमों का सुधार नौजवानों के सुधार

के बग़ैर नहीं हो सकता। नई नस्लें जब तक इस दीन और उन सिद्धांतों को समझने वाली न हों जिनको ख़ुदा तआला की तरफ़ से उस के नबी और मामूर दुनिया में क़ायम करते हैं, उस वक़्त तक इस जमाअत का तरक़्क़ी की तरफ़ कभी भी सही अर्थों में क़दम नहीं उठ सकता। बे-शक तरक़्क़ी होती है। मगर इस तरह कि कभी तरक़्क़ी हुई और कभी रुक गई। कभी बढ़ गए और कभी रुकावट पड़ गई। इस तरह ख़ुदाई सिलसिला पहाड़ों की तरह ऊंचा नीचा होता चला जाता है। लेकिन बहरहाल रुकावट बुरी चीज़ है। कोई अच्छी चीज़ नहीं और हमें उस को जल्द से जल्द दूर करना चाहिए। मगर ये रुकावटें आज हम में ही पैदा नहीं हुईं। पहली क़ौमों और पहले ज़मानों में भी मौजूद थीं। जिनको नज़रअंदाज करते हुए बाज़ लोग हमारी जमाअत पर ये एतराज़ कर दिया करते हैं कि अगर ये ख़ुदाई सिलसिला है तो इस में अमुक अमुक कमी क्यों है। हालाँकि ये बातें पहले ज़मानों में भी थीं।..

इस्लाम और अहमदियत की शिक्षाओं की हक़ीक़ी रूह नौजवानों में जलवागर हो

..मगर उस के ये अर्थ नहीं कि इन चीज़ों को क़ायम रखा जाये बल्कि हमें इन बातों के सुधार की फ़िक्र करनी चाहिए और वह सुधार इसी रंग में हो सकता है कि नौजवानों को इस बात की तलक़ीन की जाये कि वे अपने अंदर ऐसी रूह पैदा करें कि इस्लाम और अहमदियत का हक़ीक़ी मग़ज़ उन्हें मिल जाए। अगर उनके अंदर अपने तौर पर ये बात पैदा हो जाएगी तो फिर किसी हुक्म की ज़रूरत नहीं रहती। हुक्म देना कोई ऐसा अच्छा नहीं होता। दुनिया में बेहतरीन सुधारक वही समझा जाता है जो सुधार के साथ अपने मानने वालों में ऐसी रूह पैदा कर देता है कि उस का हुक्म मानना लोगों के लिए आसान हो जाता है और वे अपने दिल पर कोई बोझ महसूस नहीं करते। यही वजह है कि क़ुरआन-ए-करीम बाक़ी इल्हामी पुस्तकों पर श्रेष्ठता रखता है। अन्य इल्हामी किताबें तो ये कहती हैं कि ये करो और वो करो मगर क़ुरआन ये कहता है कि इसलिए करो और इसलिए करो। मानो वह ख़ाली हुक्म नहीं देता बल्कि उस हुक्म का पालन करने की इन्सानी दिलों में रुचि भी पैदा कर देता है। तो समझाना और समझा कर क़ौम के लोगों को तरक़्क़ी के मैदान में अपने साथ ले जाना ये कामयाबी का एक अहम गुरु है और क़ुरआन-ए-करीम ने इस पर ख़ास ज़ोर दिया है। अत: सूरह लुक़्मान में हज़रत लुक़्मान अ० की अपने बेटे को मुख़ातिब करके जो नसीहतें बयान की गई हैं उनमें से एक नसीहत ये है कि وَاقۡصِدۡ فِیۡ مَشۡیِکَ وَاغۡضُضۡ مِنۡ صَوۡتِکَ (लुक़्मान-20) तुम्हारे साथ चूँकि कमज़ोर लोग भी होंगे इसलिए ऐसी तर्ज़ पर चलना कि कमज़ोर पीछे न रह जाएं। बे-शक तुम आगे बढ़ने की भी कोशिश करो मगर इतने तेज़ भी न हो जाओ कि कमज़ोर स्वभाव के लोग बिलकुल जाएं।

सर्वोत्तम माध्यम क़ौमी तरक़्क़ी का ये होता है कि सबकी अक़्ल तेज़ कर दी जाये। उधर उन्हें हुक्म मिले और इधर दिल उस का पालन करने के लिए पहले ही तैयार हों और वे कहें कि हम तो पहले ही इसकी प्रतीक्षा में थे। हदीसों में ऐसे बहुत से वाक़ियात आते हैं कि जब क़ुरआनी आदेश उतरते तो सहाबा कहते हम तो पहले ही इन आदेशों की प्रतीक्षा में थे। इस का परिणाम ये होता कि वह तुरंत पालन करने की ओर ध्यान देती है और बेहस या ग़लत बेहस से बच जाते। अत: ऐसे माध्यम अपनाने चाहिए जिनसे क़ौम के दिमाग़ का प्रशिक्षण हो और विशेषकर नौजवानों के दिमाग़ का, क्योंकि ज़्यादा-तर कामों की ज़िम्मेदारी आइन्दा नौजवानों पर ही पड़ने वाली है। (अल फ़ज़ल 10 अप्रैल 1938 ई)

फ़रहत अहमद आचार्य

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 21.01.2022 मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद, टिलफोर्ड बर्तानिया

आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के महान स्तरीय बदरी सहाबी हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ीयल्लाहु अन्हु के सद्गुणों का ईमान वर्धक वर्णन

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूर: फ़ातिह: की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया-

सीरत ख़ातमुन्नबिय्यीन में लिखा है कि मदीना पहुंचने पर रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ऊँटनी दो मुसलमान बच्चों सहल तथा सुहेल की जिस जगह पर आकर बैठी थी उस ज़मीन को आप स. ने मस्जिद तथा अपने हुजरों के निर्माण हेतु पसन्द फ़रमाते हुए दस दीनार में ख़रीद लिया, जिसका भुगतान हज़रत अबू बकर रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु के माल से किया गया। एक रिवायत में आता है कि आप स. ने दुआ मांगते हुए आधार शिला रखी तथा हज़रत अबू बकर रज़ी. से फ़रमाया कि अपना पत्थर मेरे पत्थर के साथ रखो फिर आप स. ने हज़रत उमर रज़ी. से फ़रमाया कि अपना पत्थर अबू बकर के पत्थर के साथ रखो फिर हज़रत उसमान रज़ी. से फ़रमाया कि अपना पत्थर उमर के पत्थर के साथ रखो। मस्जिद नबवी के निर्माण का पूरा काम तथा उसके बाद मुहर्रम ७ हिजरी में ख़ैबर के युद्ध में विजय के बाद इसके विस्तार तथा नव निर्माण में आप स. ने भी सहाबियों के साथ मिल कर भाग लिया।

सही बुख़ारी की व्याख्या करने वाले अल्लामा क़स्तलानी बयान करते हैं कि बन्धुत्व का सम्बंध बनाना दो बार हुआ। पहली बार हिजरत से पहले मक्का में आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत अबू बकर रज़ी. हज़रत हमज़ा रज़ी. और हज़रत ज़ैद बिन हारसा रज़ी, हज़रत उसमान रज़ी. तथा हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ी, हज़रत ज़ुबैर रज़ी. और हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ी तथा हज़रत अली रज़ी. और अपने बीच में बन्धुत्व क़ायम फ़रमाया। दूसरी बार हिजरत के बाद मदीना में आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत अनस बिन मालिक रज़ी. के घर में पचास मुहाजिर तथा पचास अन्सार के बीच बन्धुत्व स्थापित फ़रमाया।

बदर की लड़ाई के लिए चलने से पहले सहाबियों के पास ७० ऊँट थे। एक एक ऊँट तीन तीन बारी

आदमियों के बारी बारी सवार होने के लिए निश्चित किया गया था। हज़रत अबू बकर रज़ी. और हज़रत उमर रज़ी. और हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ी. एक ऊँट पर बारी बारी सवार होते थे। बदर के लिए आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम, अबू सुफ़यान के व्यापारिक दल की रोक थाम के लिए मदीने से निकले जो शाम देश की ओर से आ रहा था किन्तु जब आप स. को सूचना मिली कि क़ुरैश की एक सेना बड़ी तेज़ गति से इस दल को बचाने के लिए निकल चुकी है तो आप स. ने सहाबा किराम से सुझाव मांगा। एक दल ने कहा कि दुश्मन को छोड़ कर व्यापारिक क़ाफ़ले की ओर ही जाना चाहिए तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पवित्र मुख का रंग बदल गया। उस अवसर पर हज़रत अबू बकर रज़ी. तथा हज़रत उमर रज़ी. ने अति उत्तम बात की। हज़रत मिक़दाद रज़ी. ने निवेदन किया कि या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम, जिसका अल्लाह ने आदेश दिया उसी ओर चलिए, हम आप स. के साथ तलवारों से लड़ाई करते हुए चलते चले जाएँगे, यहाँ तक कि बर्कुलग़माद नामक स्थान तक पहुंच जाएँ। बर्कुलग़माद मक्का से पाँच रात की यात्रा पर एक नगर है। इस बात पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का चेहरा-ए-मुबारक चमक उठा और आप स. इस बात से अत्यधिक आनन्दित हुए।

हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु की दलेरी के बारे में हज़रत अली रज़ी. से एक रिवायत है कि हज़रत अली रज़ी. ने एक बार फ़रमाया कि सहाबियों में सर्वाधिक बहादुर तथा दलेर हज़रत अबू बकर रज़ी. थे। जब बदर के युद्ध का दिन था हमने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए सायबान तय्यार किया फिर हमने कहा कि कौन है जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ रहे ताकि आप स. तक कोई मुशरिक न पहुंच पाए, तो अल्लाह की क़सम हममें से कोई आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के निकट नहीं गया परन्तु हज़रत अबू बकर रज़ी. तलवार को सोंते हुए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सिर के पास खड़े हो गए कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास कोई मुशरिक नहीं पहुंचेगा किन्तु पहले वह अबू बकर से मुक़ाबला करेगा।

इसके विषय में हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ीयल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि बदर के युद्ध में जब रसूल करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए एक अलग चबूतरा बनाया गया तो उस अत्यंत भयानक अवसर पर बड़ी दलेरी के साथ आप स. की सुरक्षा का दायित्व हज़रत अबू बकर रज़ी. ने नंगी तलवार सोंते हुए आप स. के पास खड़े रह कर पालन किया जबकि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने रात भर रो रोकर दुआएँ कीं, पूरी सेना में केवल आप स. ही थे जो रात भर जागे।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ी. कहते हैं कि बदर की लड़ाई वाले दिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक हज़ार मुशरिकों के मुक़ाबले पर तीन सौ उन्नीस सहाबियों को देखा तो $किबले की ओर मुंह किया और दोनों हाथ फैला कर अपने रब को बुलन्द आवाज़ से पुकारते रहे कि ऐ अल्लाह! तू ने मेरे साथ जो वादा किया है उसे पूरा फ़रमा, यदि तू ने मुसलमानों का यह गिरोह हलाक कर दिया तो ज़मीन पर तेरी इबादत नहीं की जाएगी। हज़रत अबू बकर रज़ी. ने निवेदन पूर्वक कहा कि आप स. की अपने रब के समक्ष दु:ख से भरी दुआ ही काफ़ी है, वह अपने वादे अवश्य पूरे फ़रमाएगा। इस पर अल्लाह तआला ने यह आयत नाज़िल फ़रमाई-

اِذۡ تَسۡتَغِیۡثُوۡنَ رَبَّکُمۡ فَاسۡتَجَابَ لَکُمۡ اَنِّیۡ مُمِدُّکُمۡ بِاَلۡفٍ مِّنَ الۡمَلٰٓئِکَۃِ مُرۡدِفِیۡنَ (सूर: अनफ़ाल-9)
अर्थात (याद करो) जब तुम अपने रब से फ़रयाद कर रहे थे तो उसने तुम्हारी विनती को स्वीकार कर लिया (इस वादे के साथ) कि मैं अवश्य एक हज़ार पंक्तिबद्ध फ़रिश्तों से तुम्हारी सहायता करूंगा। अत: अल्लाह ने फ़रिश्तों के साथ आप स. की मदद फ़रमाई।

बदर के युद्ध में जब घमसान की लड़ाई शुरु हो गई तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सायबान के नीचे तशरीफ़ लाए तथा लोगों को युद्ध के लिए प्रोत्साहित किया। लोग अपनी अपनी पंक्तियों में अल्लाह की स्तुति कर रहे थे। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने स्वयं अत्यधिक लड़ाई की तथा आपके संग संग हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ी. युद्ध करते रहे। हज़रत अबू बकर रज़ी. की अपूर्व दलेरी सामने आई, आप हर एक दुष्ट काफ़िर से लडने के लिए तय्यार थे यद्यपि आपका बेटा ही क्यूँ न हो। हज़रत अबू बकर रज़ी. के बेटे अब्दुर्रहमान काफ़िरों की ओर से लडने के लिए आए थे। जब उन्होंने इस्लाम क़बूल किया तो अपने वालिद हज़रत अबू बकर रज़ी. से निवेदन पूर्वक कहा कि बदर के युद्ध वाले दिन आप रज़ी. मेरे सामने स्पष्ट निशान तथा निशाने पर थे किन्तु मैंने आप रज़ी. की हत्या नहीं की, तो हज़रत अबू बकर रज़ी. ने फ़रमाया- ख़ुदा ने तुझे ईमान नसीब करना था इस लिए तू बच गया, अन्यथा ख़ुदा की क़सम! यदि मैं तुझे देख लेता तो अवश्य मार डालता।

मदीना पहुंच कर हज़रत अबू बकर रज़ी. ने आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सुझाव दिया कि बन्दियों को फ़िदया (स्वतंत्र होने के लिए धन राशि) लेकर छोड़ देना चाहिए क्यूँकि हो सकता है कि कल को इन्हीं में से इस्लाम के लिए बलिदान देने वाले पैदा हो जाएँ। हज़रत उमर रज़ी. ने इस सुझाव का विरोध किया तथा कहा कि इन सबकी हत्या कर देनी चाहिए। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी स्वभाविक दया से प्रभावित होकर हज़रत अबू बकर रज़ी. के सुझाव को पसन्द किया तथा आदेश दिया कि जो मुशरिक अपना फ़िदया इत्यादि अदा कर दें उन्हें छोड़ दिया जाए। अत: बाद में इसी के अनुसार अल्लाह का आदेश भी अवतरित हुआ।

ओहद की लड़ाई मुसलमानों तथा मक्का के क़ुरैशियों के बीच हुई। एक सपने के आधार पर आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मदीने के अन्दर रह कर मुक़ाबला करना उचित समझा किन्तु अधिकांश युवा सहाबियों के अति अनुग्रह पर तथा जोश के साथ निवेदन करने पर नगर से बाहर निकल कर खुले मैदान में मुक़ाबला करने की बात मान ली। फिर जब आप स. हथ्यार लगा कर अल्लाह का नाम लेते हुए बाहर तशरीफ़ ले गए तो कुछ सहाबियों के कहने पर नौजवानों को अपनी ग़लती का आभास हुआ तथा उन्होंने पश्चाताप और ग्लानि के साथ एक ज़बान होकर निवेदन किया कि हमसे ग़लती हो गई है। आप स. जिस तरह उचित समझते हैं उसी प्रकार गतिविधि फ़रमाएँ। आप स. ने फ़रमाया- ख़ुदा के नबी की शान से यह बात मेल नहीं खाती कि वह हथ्यार लगा कर फिर उन्हें उतार दे, इससे पहले कि ख़ुदा कोई निर्णय करे। अत: यदि अब तुमने धैर्य से काम लिया तो विश्वास रखो कि अल्लाह तआला की सहायता के तुम पात्र होगे।

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ी. ने लिखा है कि ओहद की लड़ाई में आँहज़रत सल्लल्लाहु

अलैहि वसल्लम के चारों ओर डटे सहाबियों ने जो बलिदान की भावना दिखाई, इतिहास उनका उदाहरण लाने में असमर्थ है। ये लोग परवानों की भांति आप स. के लिए अपनी जान पर खेल रहे थे। जो वार भी पड़ता था अपने ऊपर लेते तथा साथ ही दुश्मन पर भी वार करते जाते थे। एक समय ऐसा आया कि आप स. के आस पास केवल दो आदमी रह गए, उन बलिदानियों में हज़रत अबू बकर रज़ी, अली रज़ी, तल्हा रज़ी, ज़ुबैर रज़ी, सअद बिन वक़ास रज़ी, अबू दजाना अन्सारी रज़ी, सअद बिन मुआज़ रज़ी तथा तल्हा अन्सारी रज़ी. के नाम विशेष रूप से उल्लिखित हुए हैं।

ओहद की लड़ाई के समय नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुबारक दांत शहीद हो चुके थे और चेहरा ज़ख़्मी था। आप स. के पवित्र गाल में युद्ध कवच की कड़ियाँ धंस चुकी थीं हज़रत अबू उबैदा रज़ी. ने उन कड़ियों को अपने मुंह से निकालने की कोशिश की तो उनके भी सामने वाले दो दांत टूट गए तथा वे सामने के टूटे हुए दांत वाले लोगों में सबसे अधिक सुन्दर थे। इसके पश्चात हज़रत अबू उबैदा रज़ी. हज़रत अबू बकर रज़ी. के साथ हज़रत तलहा रज़ी. के पास आए तो देखा कि उनके शरीर पर भाले, तलवार तथा तीरों के कम से कम ७० घाव थे तथा उनकी उंगली भी कटी हुई थी, तो उन्होंने उनकी मर्हम पट्टी की।

ओहद के युद्ध में एक अवसर पर जब पहाड़ की घाटी में मुसलमानों की बची ख़ुची सेना खड़ी थी तो अबू सुफ़यान ने बड़ी ज़ोरदार आवाज़ में कहा कि हमने मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को मार दिया, अबू बकर, उमर को भी मार दिया। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आदेश पर जब इस्लाम की सेना में से किसी ने जवाब न दिया तो काफ़िरों ने अपने दावे पर विश्वास करते हुए ख़ुशी के साथ नारा लगाया-

اُعْلُ هُبَلْ ۔ اُعْلُ هُبَلْ

अर्थात हमारे आदरणीय हुब्ल देवता की शान ऊँची रहे कि उसने आज इस्लाम को नष्ट कर दिया है। जब ख़ुदाए वाहिद की प्रतिष्ठा का सवाल पैदा हुआ तथा शिर्क का नारा मैदान में लगाया गया तो आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आदेश पर सहाबियों ने बड़े जोश के साथ जवाब दिया-

اَللّٰہُ اَعْلٰی وَاَجَلّ ۔ اَللّٰہُ اَعْلٰی وَاَجَلّ

अर्थात अल्लाह वहदहू ला शरीक की प्रतिष्ठावान है तथा उसकी शान ही ऊँची है। इस उत्तर का प्रभाव काफ़िरों की सेना पर इतना गहरा पड़ा कि उनके दिल अन्दर ही अन्दर भयभीत हो गए तथा उन्होंने जल्दी जल्दी मक्का को लौट जाना ही उचित समझा। परन्तु आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सावधानी करते हुए ७० सहाबियों का एक दल जिसमें हज़रत अबू बकर रज़ी. और हज़रत ज़ुबैर रज़ी. भी शामिल थे, उनके पीछे भेजते हुए फ़रमाया कि यदि क़ुरैश ऊँटों पर सवार हों तथा घोड़ों को ख़ाली चला रहे हों तो समझना कि वे मक्का की ओर वापस जा रहे हैं, और यदि वे घोड़ों पर सवार हों तो समझना कि उनकी धारणा नेक नहीं। फिर आप स. ने बड़े जोश की अवस्था में फ़रमाया कि यदि क़ुरैश ने इस समय मदीने पर हमला किया तो ख़ुदा की क़सम हम उनका मुक़ाबला करके उन्हें इस हमले का मज़ा चखा देंगे। अतएव जल्दी ही यह सूचना मिल गई कि क़ुरैश की सेना मक्का की ओर जा रही है। हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया कि इन्शाअल्लाह तआला यह वर्णन आगे भी चलेगा।

☆ ☆ ☆

क़ुरआन-ए-मजीद की 26 आयतों पर आरोपों के उत्तर

(लेखक- मुहम्मद हमीद कौसर, नाज़िर दावत इलाल्लाह मर्कज़िया, उत्तर भारत क़ादियान)
(भाग-3) अनुवादक- सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद M.A.

हिफ़ाज़त क़ुरआन मजीद और जमाअत अहमदिया

जमाअत अहमदिया मुस्लिमा ने हर दौर में इस्लाम धर्म के संस्थापक हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और क़ुरआन मजीद की तरफ़ मंसूब होने वाले आरोपों के उत्तर दिए हैं और हमेशा क़ुरआन मजीद का मान सम्मान ऊंचा करने के लिए सेवाएं दी हैं इसकी वज़ाहत इंतिहाई सार गर्भित रूप से दर्ज है।

19 वीं सदी के आख़िर और बीसवीं सदी के शुरू में हिन्दुस्तान पर बर्तानवी सामराज्य की हुकूमत थी इस दौर में इस्लाम विरोधियों की तरफ़ से आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि अलैहि वसल्लम को और आप पर नाज़िल होने वाले क़ुरआन-ए-मजीद को अत्याधिक आरोपों का निशाना बनाया जा रहा था और उन आरोपों के कारण से बहुत से मुसलमान इस्लाम से बद-दिल हो कर ईसाइयत में चले गए थे और उस ज़माने के हालात को देखकर ऐसा लगता था कि शायद इस्लाम अब ज़्यादा देर इस मुल्क में क़ायम नहीं रह सकेगा। उस ज़माना के शायरों की शायरी से भी अंदाज़ा होता है मशहूर शायर अलताफ़ हुसैन हाली (1837-1914) ने 1879 में अपनी मुसद्दस में लिखा कि

रहा दीन बाक़ी न इस्लाम बाक़ी
इक इस्लाम का रह गया नाम बाक़ी

फिर मिल्लत-ए-इस्लामिया की एक बाग़ से उदाहरण देते हुए लिखते हैं कि

फिर इक बाग़ देखेगा उजड़ा सरासर
जहां ख़ाक उड़ती है हर-सू बराबर
ये आवाज़ पैहम आ रही है
कि इस्लाम का बाग़ वीरान यही है

इस्लाम पर विरोधियों की तरफ़ से ऐतराज़ात का यह सिलसिला जारी था कि हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी अलैहिस्सलाम ने इन आरोपों के रद्द के लिए 1880 से 1884 ई में अपनी प्रसिद्ध पुस्तक बराहीन अहमदिया लिखी। बराहीन अहमदिया में आप ने इस्लाम के विरोधियों को संबोधित करते हुए तहरीर फ़रमाया कि मैंने जितने क़ुरआन-ए-मजीद के सच्चे होने के तर्क तथा प्रमाण लिखे हैं अगर कोई अपनी इल्हामी किताब में से आधे या तिहाई या चौथाई या पांचवां हिस्सा निकाल कर लिख दे या अगर यह भी न कर सके तो मेरी पुस्तक में लिखी दलीलों को क्रम से तोड़ दे तो मैं निस्संदेह अपनी जायदाद जो दस हज़ार रुपए की है उसके सुपुर्द कर दूंगा और उसका जायज़ा तीन जज लेंगे और उन्ही का फ़ैसला आख़िरी होगा। यह वह पहली प्रतिरक्षा थी जो आप अलैहिस्सलाम ने क़ुरआन-ए-मजीद की फ़रमाई। इस के बाद

क़ुरआन-ए-मजीद पर होने वाले आरोपों के दांत तोड़ने वाले और तसल्ली देने वाले जवाब देने और उसकी ज़ाहिरी तथा मानवी मुहाफ़िज़त का सिलसिला आपकी वफ़ात तक रहा।

इस के बाद हर दौर में आपके ख़लीफ़ा (जांनशीन) ने क़ुरआन की रक्षा और उसकी तब्लीग़ तथा प्रचार पर उसकी ज़ाहिरी तथा माअनवी हिफ़ाज़त का फ़रीज़ा अदा किया और वर्तमान समय में हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद नसरहुल्लाह तआला यह फ़र्ज़ बहुत उत्तम तरीका से अदा कर रहे हैं। अब तक जमाअत अहमदिया मुस्लिमा 100 से अधिक भाषाओं में सम्पूर्ण क़ुरआन मजीद का या उसकी चयनित आयतों का अनुवाद प्रकाशित कर चुकी है।

भारत की निम्निखित भाषाओं में क़ुरआन मजीद का सम्पूर्ण अनुवाद अरबी मूल कुरआन के साथ क़ादियान (पंजाब) से प्रकाशित हो चुका है और वे भाषाएं ये हैं-
(1)उर्दू (2) हिन्दी (3) अंग्रेज़ी (4) पंजाबी (5) डोगरी (6) बंगला (7) उड़िया (8) आसामी (9) पंजाबी (10) मलयालम (11) तामिल (12) कन्नड़ (13) मराठी (14) गुजराती (15) तेलुगू (16) कश्मीरी
इन अनुवादों की प्रकाशन का उद्देश्य यह है कि हर इन्सान अनुवाद की मदद से किसी सीमा तक क़ुरआन के अर्थों और उसके मआरिफ़ को समझ ले कि इस के लिए इस में क्या रुहानी, धार्मिक पैग़ाम दिया गया है और हज़ारों लोग इस से फ़ायदा उठा रहे हैं। अलहमदु लिल्लाह अला ज़ालिक। (शेष...)

जमाअत अहमदिया और जिहाद का अक़ीदा

हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने यह भविष्यवाणी फ़रमाई थी कि मैं उम्मत-ए- मुहम्मदिया में जिस मसीह की आमद (आने) की खुशखबरी दे रहा हूँ वह "منکم" मुसलमानों में से ही एक व्यक्ति होगा और वही इमाम महदी होगा। आपने फ़रमाया وَلَا المَهدِىُّ اِلَّاعِيْسَى اِبْنُ مَرْيَمَ (सुन्न इब्ने माजा, किताबुल फितन, बाब शिद्द्तुल अल्ज़मान) अर्थात् महदी के अतिरिक्त और कोई ईसा इब्ने-ए-मरियम नहीं आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने आने वाले मसीह-ओ-महदी के बारे में यह भी ख़बर दी थी कि वह जिज़्या को स्थगित कर देगा। और कुछ रिवायात में जिज़्या की जगह "الحرب'' भी आया है अर्थात् तलवार से जिहाद स्थगित कर देगा। स्पष्ट रहे कि "जिहाद" अरबी भाषा का शब्द है जो " جُهدٌ " से बना है जिसके अर्थ मुशक़्क़त बर्दाश्त करना है और जिहाद के अर्थ हैं किसी काम के करने में पूरी कोशिश करना और किसी किस्म की कमी न छोड़ना हम उर्दू में भी कहते हैं जद्दो जहद करना। क़ुरआन-ए-मजीद और अहादीस में जिहाद की बहुत सी क़िस्में वर्णन हुई हैं। हदीस में आता है।

عن جابر قال قدم النبی صلی اللہ علیہ وسلم من غزاة له فقال لهم رسول الله صلی الله علیه وسلم‘‘قد متم خیر مقدم وقد متم من الجهاد الاصغر اِلی الجهاد الاکبر قالو وماا لجهاد الا کبر یا رسول الله قال مجاهد ة العبد هواه ۔ (تاریخ بغداد ذکرمن اسمه هارون ،الجزء٦صفحه١٧١)

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं कि हज़रत नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम एक ग़ज़वा से वापस तशरीफ़ ला रहे थे आपने वे लोग जो ग़ज़वा से वापस आए थे उनको

संबोधित करते हुए फ़रमाया तुम्हारी आमद बहुत अच्छी आमद है और तुम असग़र (अर्थात् छोटे जिहाद से जिहाद) अकबर की तरफ़ आए हो सहाबा ने पूछा कि हे अल्लाह के रसूल जिहाद अकबर किया है आपने उत्तर में फ़रमाया बंदे का अपनी इच्छाओं के ख़िलाफ़ जिहाद।

पहले दर्जे का जिहाद वह है जो इन्सान अपने नफ़स के ख़िलाफ़ करता है। इस्लाम में सबसे बड़ा जिहाद यह है कि इन्सान अपने आप को गुनाहों से बचाए, नेक और अच्छे काम करे और जब एक मुसलमान अपने आपको पाक कर लेता और बाअमल बन जाता है तो उसे दूसरे दर्जे का जिहाद (कबीर) करने का हुक्म है। जैसा कि फ़रमाया جَاهِدْهُمْ بِهٖ جِهَادًا كَبِيْرًا(سورة الفرقان ،سورة نمبر ٥٢آیت نمبر ٣٥) तो क़ुरआन-ए-मजीद की शिक्षा को दूसरों तक प्रेम, तर्कों से पहुंचा। जमाअत अहमदिया के अधिकतर लोगों ख़ुदा तआला के फज़ल से दिन रात जिहाद-ए-कबीर में व्यस्त हैं, तीसरे दर्जे का जिहाद सबसे छोटा जिहाद जिहाद असग़र कहलाता है। यह केवल उस वक़्त करने की आज्ञा है जबकि मुसलमान रुबिना अल्लाह कहने की वजह से ज़ुलम किए जाएं । और ऐसी हालत में यदि मुसलमान छोटा जिहाद करेंगे तो अल्लाह तआला का वादा है "व इन्नल्लाह अला नस्त्रिहिम लक़दीर" (सूरत उल-हज्ज, सूरत नंबर 22 आयत- 40) निसंदेह अल्लाह उनकी सहायता पर पूरी क़ुदरत रखता है, आज के जो मुसलमान और उनके मौलवी जिहाद, जिहाद का नारा लगा कर मासूम इन्सानों को क़तल करते और करवाते हैं इसका इस जिहाद से दूर का भी ताल्लुक़ नहीं है जिसे क़ुरआनी जिहाद कहा जाता है । यदि यह क़ुरआनी जिहाद होता तो ज़रूर अल्लाह तआला उन्हें अपने वादे के अनुसार प्रभुत्व प्रदान करता। पिछले एक सौ वर्ष में उनकी हर मैदान में शिकस्त और पराजय इस बात का स्पष्ट इशारा बनी है कि यह क़ुरआन का जिहाद नहीं। यदि यह वह होता तो उन्हें ज़रूर विजय नसीब होती। फिर सय्यदना मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का स्पष्ट फ़रमान है मुस्लिम और मोमिन वह है जिसकी भाषा और हाथ से लोगों के जान-ओ-माल महफ़ूज़ रहें। यदि आज अपने आपको मुसलमान मोमिन कहलाने वालों के हाथों से कहीं मासूम इन्सानों का क़तल होता है तो वही बताएं कि इस फ़रमान-ए-रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का क्या अर्थ है ? अतः साबित हुआ कि हदीस रसूलुल्लाह अल्लाह अलैहि वसल्लम के अनुसार मुसलमान और मोमिन तो ऐसा करेगा नहीं। यदि कोई करता है तो फिर वह इस्लाम दुश्मन ताक़तों के इशारे पर इस्लाम और हक़ीक़ी मुसलमानों को बदनाम करने के लिए ऐसा कर रहा होगा। यह बात भी दरुस्त है कि पिछली सदी में दुनिया के कुछ मुल्कों और इलाक़ों में याजूज-ओ-माजूज और दज्जाल की सियासत और ख़ुद मुसलमानों की अपनी ग़लतियों के नतीजा में मुसलमान दूसरी क़ौमों से युद्ध में लड़ते रहे हैं और अब तक यह सिलसिला जारी है। स्पष्ट रहे कि यह सबकी सब सयासी लड़ाइयां झगड़े क़तल-ओ-ग़ारत है। उनका इस्लाम और क़ुरआन से कोई भी ताल्लुक़ नहीं। और यदि उन्हें कोई इस्लाम की तरफ़ मंसूब करता है तो वह सख़्त ग़लती पर है। यहां यह प्रश्न पैदा होता है कि इस्लाम की शांतिपूर्ण शिक्षा के होते हुए, जिहाद का ग़लत मफ़हूम मुसलमानों में कहाँ से सरायत कर गया। यदि तारीख़ का गहराई से अध्यन किया जाए तो इस प्रश्न का उत्तर आसानी से मिल जाएगा। इस्लाम की इबतिदाई सदियों में इस्लाम की ग़ैरमामूली प्रगतियों को देखकर इस्लाम के दुश्मन समझ गए

कि अब इस्लाम का मुक़ाबला हमारे बस की बात नहीं रही। दूसरी तरफ़ वह इस्लाम को तबाह-ओ-बर्बाद और नाकाम-ओ-बदनाम करना चाहते थे। इसलिए उन्होंने मुसलमानों में शामिल हो कर कुछ ग़लत अक़ायद मुसलमानों में फैलाने शुरू किए।

जब यहूद और ईसाइयों ने देखा कि तौरात और इंजील में तो इंतिहाई जारिहाना और ज़ालिमाना शिक्षा भी दी गईं हैं और इसके मुक़ाबिल पर क़ुरआन-ए-करीम में इंतिहाई मुतवाज़िन और शांतिपूर्ण शिक्षा दी गईं हैं तो उन्होंने जिहाद के शब्द की ग़लत तफ़सीर मुसलमानों में फैलाना शुरू की, और दूसरी तरफ़ मतलब परस्त मुसलमान कहलाने वाले बादशाहों को अपनी सल्तनतों की वुसअत के लिए जिहाद की ग़लत तफ़सीर की ज़रूरत थी, इसलिए उन्होंने अपने ज़माने के उल्मा के माध्यम से ग़लत तफ़सीर को ख़ूब रिवाज दिया और नतीजा यह निकला कि आज जिहाद की ग़लत तफ़सीर को ही असल तफ़सीर समझ कर इस्लाम के सम्बन्ध में बहुत सी ग़लत-फ़हमियाँ पैदा कर दी गईं। इस ग़लतफ़हमी और इस तरह की और बहुत सी ग़लत-फ़हमियों के अज़ाला के लिए अल्लाह तआला ने हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी अलैहिस्सलाम को मसीह मौऊद और इमाम महदी बना कर भेजा। और उन्होंने ऐलान फ़रमाया -

"आज से इन्सानी जिहाद जो तलवार से किया जाता था ख़ुदा के हुक्म के साथ बंद किया गया । अब इसके बाद जो व्यक्ति काफ़िर पर तलवार उठाता है और अपना नाम ग़ाज़ी रखता है वह उस रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की न-फ़रमानी करता है जिसने आज से तेराह सौ बरस पहले फ़र्मा दिया है कि मसीह मौऊद के आने पर समस्त तलवार के जिहाद ख़त्म हो जाएंगे। अत: अब मेरे ज़हूर के बाद तलवार का कोई जिहाद नहीं। हमारी तरफ़ से अमान और सलहकारी का सफ़ैद झंडा बुलंद किया गया है। ख़ुदा तआला की तरफ़ दाअवत करने की एक राह नहीं। अत: जिस राह पर नादान लोग ऐतराज़ कर चुके हैं, ख़ुदा तआला की हिक्मत और मस्लिहत नहीं चाहती कि उसी राह को फिर इख़तियार किया जाए। उसकी ऐसी ही उदाहरण है कि जैसे जिन निशानों की पहले तक़ज़ीब हो चुकी वह हमारे सय्यद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को नहीं दिए गए।" (रुहानी ख़ज़ायन भाग 16 पृष्ठ 28)

واعلموا ان وقت الجہاد السیفی قد مضی ولم یبق الاجہاد القلم و الدعا و آیات عظمی (حقیقۃ المہدی، روحانی خزائن، جلد ۱٤، صفحہ ٧٥٤)

अर्थात् जान लो कि अब तलवार के जिहाद का वक़्त नहीं है बल्कि क़लम और दुआ और बड़े बड़े निशानों के माध्यम से जिहाद करने का ज़माना है ।

यहां संक्षेप से एक और बात का वर्णन भी बहुत ज़रूरी है। आजकल दुनिया में मानों एक फ़ैशन बन गया है कि यदि दुनिया के किसी कोने में दहशतगर्दी का कोई वाक़िया हो जाएगी तो उसे हमारे मुल्क और दुनिया के कुछ अख़बारात और प्रकाशन के संस्थानों ने तुरंत इस्लामिक दहशतगर्दी का नाम दे देते हैं। ऐसे अख़बारात पर हैरत होती है, यदि किसी दूसरे मज़हब के लोग इसी किस्म की कार्यवाहियां करें तो उनकी कार्यवाहियां उनके मज़हब की तरफ़ मंसूब नहीं करते। उदाहरण के तौर पर यदि अमरीका हीरोशीमा व नागा

साक़ी पर एटम-बम गिराए या अमरीका और बर्तानिया अफ़ग़ानिस्तान और इराक़ पर बमबारी करें तो इस कार्रवाई को मसीही दहशतगर्दी नहीं कहा जाता। यदि जनरल डायर जलियांवाला बाग़ में सैंकड़ों भारतियों को गोलियों से छलनी कर दे तो उसे भी ईसाई दहशतगर्दी का नाम नहीं दिया जाता।

अत: इस वज़ाहत के बाद कुछ अनपढ़ मुसलमानों की तरफ़ से अपनी नादानी या किसी के उकसाने पर क़तल-ओ-ग़ारत करना किसी भी सूरत में इस्लाम की तरफ़ मंसूब करना मुनासिब नहीं है।

(जमाअत अहमदिया मुस्लिमा की तरफ़ से जिहाद के सम्बन्ध में इस वज़ाहत के साथ इन आयतों की व्याख्या प्रस्तुत की जा रही है जो कि निवेदन कर्ता ने अपने निवेदन पत्र में प्रस्तुत की हैं।)

नीचे निवेदन कर्ता की ओर से पेश की गई आयतों का अरबी मूल, उस का अनुवाद और फिर व्याख्या प्रस्तुत है-

ऐतराज़ आयत नम्बर 2(a)

فَاِذَا انْسَلَخَ الْاَشْهُرُ الْحُرُمُ فَاقْتُلُوا الْمُشْرِكِيْنَ حَيْثُ وَجَدْتُّمُوْهُمْ وَخُذُوْهُمْ وَاحْصُرُوْهُمْ وَاقْعُدُوْا لَهُمْ كُلَّ مَرْصَدٍ فَاِنْ تَابُوْا
وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ فَخَلُّوْا سَبِيْلَهُمْ ۚ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ

(सूरत अत्तौबा, सूरत नम्बर 9 आयत नम्बर 5)

अनुवाद: अत: जब हुर्मत वाले महीने गुज़र जाएं तो जहां भी तुम (वादा तोड़ने वाले) मुशरिकों को पाओ तो उन से लड़ो और उन्हें पकड़ो और उनका घेराव करो और हर कमीन गाह पर उन की घात में बैठो। अत: अगर वे तौबा करें और नमाज़ क़ायम करें और ज़कात अदा करें तो उनकी राह छोड़ दो। अवश्य अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार रहम करने वाला है

दरख़ास्त देने वाले की तरफ़ से पेश की गई आयात नम्बर 2a,2b,2d,2f,2i,2k,2n,2o,2p,2s,2w,2x,2z में वर्णित नम्बरों के अधीन जिन आयतों को वर्णन कर के क़ुरआन-ए-मजीद और इस्लाम की तरफ़ जो बहुत बुरे आरोप सम्बद्ध किए हैं उनसे साबित होता है कि इस व्यक्ति ने जानबूझ कर इन कारणों को नज़रअंदाज कर दिया है जो इन आयत के क़ुरआन-ए-मजीद में वर्णन का कारण बनें। वर्णन की गई आयतों का सम्बन्ध सय्यदना हज़रत मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और मुसलमानों के उस ज़माने से है जबकि वह कुफ़्फ़ार मक्का की तरफ़ से मुसलमानों पर लादी जाने वाली जंगों से अपना बचाओ अपनी हिफ़ाज़त और अपनी प्रतिरक्षा के लिए जंग लड़ने पर विविश किए गए थे। दरख़ास्त देने वाले और उसका साथदेने वाले ज़रा ग़ौर करें कि एक मक्का मुकर्रमा का आदमी अपना घर-बार ज़मीन जायदाद कारोबार व्यापार मजबूर होकर छोड़ कर अढ़ाई सौ मील दूर मदीना में अपनी नई ज़िंदगी शुरू करने के लिए हिजरत कर जाता है और यह दुश्मन अपनी तलवार के साथ मदीना पहुंच कर उसे समाप्त करना चाहते हैं। कोई बुद्धि रखने वाला इन्सान यह बताए क्या ऐसी हालत में इस अत्याचार पीड़ित को अपनी तथा अपने धर्म की सुरक्षा के लिए प्रतिरक्षा का अधिकार नहीं ?? दुनिया के हर सभ्य और इंसाफ़प्रिय इन्सान का इस सवाल

के जवाब में यही विचार होगा कि यहां इन अत्याचार पीड़ितों को अपने प्रतिरक्षा का पूरा अधिकार था। यही वह हक़ है जिस पर इस्लाम के दुश्मन पिछली चौदह सदियों से ऐतराज़ करते चले आ रहे हैं ।

अब इन आयतों की और अधिक व्याख्या प्रस्तुत है :

निवेदन कर्ता ने अपनी दरख़ास्त में जो आयतें वर्णन की हैं उनकी व्याख्या से पहले इस आयत और इसी के क्रम में वर्णित कुछ दूसरी आयतों का तारीख़ी परिपेक्ष्य वर्णन करना उचित लगता है।

इन आयतों का एतिहासिक परिपेक्ष्य यह है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर एक अनुमान के अनुसार 20 अगस्त 610 ई को क़ुरआन-ए-मजीद का उतरना आरम्भ हुआ और उसके बाद आप ने मक्का वालों को क़बूलियत इस्लाम की दावत देने का आरम्भ किया। शिर्क तथा अत्याचार इसी तरह गुनाहों मे घिरी हुई ज़िन्दगी से नजात पाने की तरफ़ बुलाया और उन्हें पवित्र साफ़ ज़िन्दगी गुज़ारने की तहरीक की इस हुज़ूर का अपना व्यक्तिगत कोई लाभ नहीं था बल्कि मक्का वाले का ही लाभ था। मक्का वालों में से जो जो इसके लाभ को अनुभव करता जाता इस्लाम स्वीकार करता चला जाता था और दूसरी तरफ़ क़ुरैश मक्का की अक्सरियत ने हुज़ूर और आप पर ईमान लाने वालों पर अत्याचार का सिलसिला शुरू कर दिया, उनको दुख और कष्ट पहुंचाने में आन्नद महसूस करने लगे। इस्लाम स्वीकार करने वालों में से एक बिलाल बिन रिबाह थे। दोपहर के समय जबकि ऊपर से आग बरसती और मक्का का पथरीला मैदान भट्टी की तरह तप रहा होता था, उन को बाहर ले जाकर लिटा देते और बड़े बड़े गर्म पत्थर उनके सीने पर रखकर उनको विवश किया जाता कि वह इस्लाम से ताइब हो जाएं मगर वह हमेशा "अहद" "अहद" (अर्थात अल्लाह एक है) कहते रहे और उन अत्याचार को बड़े सब्र और हौसला के साथ बर्दाशत करते रहे उन्हीं की तरह कुछ दूसरे लोग जिन्होंने इस्लाम को स्वीकार किया उन में अब्बू फ़क़ीह,आमिर बिन फ़ुहैरा इत्यादि शामिल थे। उनको भी इंतिहाई दुख और कष्ट दिए जाते रहे परन्तु ये सब उन मसीबतों को बड़े सब्र तथा धैर्य से बर्दाशत करते रहे। इस्लामी शिक्षाओं से प्रभावित हो कर मक्का की औरतों ने भी इस्लाम स्वीकार करना शुरू कर दिया। इन में से लुबैना, ज़नीरा, सुमय्या रज़ि पर मक्का के कुफ़्फ़ार ने इतने अत्याचार ढाए कि मक्का के आसपास के पहाड़ों को भी उन की चीख़ों पर तरस आ जाता होगा। अगर उन को बोलने की शक्ति प्राप्त होती तो वह भी कहते हे ज़ालिमो अब बस करो। ज़ुलम तथा अत्याचार अपने चरम को पहुंच गया है। जब अत्याचार बर्दाशत करते करते तेरह (13) साल गुज़र गए और हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को क़तल करने के लिए इंतिहाई ख़तरनाक मन्सूबा बनाया गया तो अल्लाह तआला ने आपको मक्का से दो अढ़ाई सौ मील दूर मदीना मुनव्वरा की तरफ़ हिज्रत कर जाने का आदेश दिया। अगर आप चाहते तो मक्का वालों के अत्याचारों को ताक़त से रोक सकते थे और इस का सबूत आपके सहाबी हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि की वह रिवायत है जो गुज़र चुकी है। जब हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और आपके पीड़ित सहाबा मदीना पहुंच गए तो कुफ़्फ़ार मक्का को चाहिए था कि वह अमन और सुकून से ख़ुद भी जीते और मुसलमानों को भी जीने देते मगर अफ़सोस ऐसा न हुआ वह उच्च किस्म की तलवारें लेकर मुसलमानों की गर्दनें उतारने के लिए मदीना की तरफ़ चल पड़े और एक हज़ार (1000) लश्कर

का मुक़ाबला तीन सौ तेरह (313) ऐसे असहात मुसलमानों से हुआ जो बेचारे अपने घर-बार को छोड़कर एक डेढ़ साल पहले मदीना आए थे और यह पीड़ित अभी तो अपने पांव पर खड़े भी न हुए थे और उन के सिरों पर छत भी नहीं थी कि उनकी गर्दनें काटने के लिए मक्का के ज़ालिम बदर के मैदान में पहुंच गए। मुसलमानों ने कुछ तलवारों, डंडों और लाठियों से उनका मुक़ाबला किया और अल्लाह तआला ने उन की ग़ैरमामूली सहायता तथा समर्थन फ़रमाया आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और आपके सहाबा को जंग में नुमायां विजय प्राप्त हुई। इस जंग से भी मक्का के कुफ़्फ़ार ने सबक़ न सीखा और इंतिक़ाम लेने के लिए मुसलमानों पर निरन्तर हमला करते हुए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने नुमाइंदे भेज कर कुफ़्फ़ार को अमन तथा शान्ति से रहने की नसीहत की। आप ही की कोशिशों के नतीजा में मार्च 628 ई में सुलह का मुआहिदा तय पाया। यह मुआहिदा भी ज़्यादा देर क़ायम न रह सका और मक्का के कुफ़्फ़ार ने मुआहिदे की समस्त शर्तों की पाबन्दी नहीं की आख़िर जब यह मुआहिदा व्याहारिक तौर पर टूट गया आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैविसल्लम अपने लश्कर के साथ पूरे अमन से मक्का में दाख़िल हुए और उसे फ़तह मक्का के नाम से पुकारा जाता है। मक्का में आप ने इन ज़ालिमों से जो कि तेरह साल मुसलमानों को निरन्तर कष्ट देते चले आए थे यह सवाल किया "हे क़ुरैश के गिरोह क्या तुम्हें पता है कि तुम्हारे साथ आज क्या व्यवहार होगा? उन्होंने जवाब दिया हम आपसे भलाई के सिवा और क्या आशा कर सकते हैं। अत्यन्त दयालु हज़रत महमुद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया आज मैं तुम्हें वही कहूँगा जो हज़रत यूसुफ़ ने अपने भाईयों से कहा था कि आज तुम आज़ाद हो और तुम पर कोई सरज़निश नहीं।"

(उद्धरित सीरतर इब्न हश्शाम)

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तरफ़ से वर्णित यह महान क्षमा और माफ़ी के बाद भी कुछ कुफ़्फ़ार और इस्लाम के शत्रु मुसलमानों को नुक़्सान पहुंचाते रहे और क़तल तथा उपद्रव का सिलसिला जारी रखा और जब अवस्था इतनी गम्भीर हो गई तो अल्लाह तआला ने आदेश दिया कि

ऐतराज़ आयत नम्बर 2(a)

فَاِذَا انْسَلَخَ الْاَشْهُرُ الْحُرُمُ فَاقْتُلُوا الْمُشْرِكِيْنَ حَيْثُ وَجَدْتُّمُوْهُمْ وَخُذُوْهُمْ وَاحْصُرُوْهُمْ وَاقْعُدُوْا لَهُمْ كُلَّ مَرْصَدٍ فَاِنْ تَابُوْا وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ فَخَلُّوْا سَبِيْلَهُمْ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ

(सूरत अत्तौबा सूरत नम्बर 9 आयत नम्बर 5)

अनुवाद: अत: जब हुर्मत वाले महीने गुज़र जाएं तो जहां भी तुम (अहद-शिकन मुशरिकों को पाओ तो उन से लड़ो और उन्हें पकड़ो और उनका मुहासिरा करो और हर ऊंची जगह पर उन की घात में बैठो। अत: अगर वे तौबा करें और नमाज़ क़ायम करें और ज़कात अदा करें तो उनकी राह छोड़ दो। अवश्य अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार रहम करने वाला है।

ऐतराज़ आयत नम्बर 2(b)

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنَّمَا الْمُشْرِكُوْنَ نَجَسٌ فَلَا يَقْرَبُوا الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ بَعْدَ عَامِهِمْ هٰذَا ۚ وَاِنْ خِفْتُمْ عَيْلَةً فَسَوْفَ يُغْنِيْكُمُ

اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖۤ اِنْ شَآءَ ۔ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ

(सूरत अलतौबा, सूरत नम्बर 9 आयत नम्बर 28)

अनुवाद: हे लोगो जो ईमान लाए हो मुशरिकीन तो अपवित्र हैं। अत: वे अपने इस साल के बाद मस्जिद हराम के क़रीब न फटकें। और यदि तुम्हें ग़ुर्बत का भय हो तो अल्लाह तुम्हें अपने फ़ज़्ल के साथ मालदार कर देगा अगर वे चाहे। अवश्य अल्लाह स्थायी ज्ञान रखने वाला (और) बहुत हिक्मत वाला है

इस आयत की वज़ाहत करते हुए हज़रत मिर्ज़ा ताहिर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहमहुल्लाह तहरीर फ़रमाते हैं कि मुशरिकीन के अपवित्र होने से अभिप्राय उन के अक़ीदा की गन्दगी है। शारीकि गन्दगी अभिप्राय नहीं। अत: मुशरिकों को हज से रोकने से अभिप्राय यह है कि उनको अपनी मुशरिकाना रस्मे अदा करते हुए हज न करने दिया जाए क्योंकि ज़माना जाहिलीयत में वह कई बार नंगे हो कर और अपने बुतों इत्यादि को साथ लेकर हज किया करते थे अत: हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा और दूसरे हनफ़ी फ़ुक़हा के नज़दीक भी मुशरिकीन मुसलमानों की हर मस्जिद में यहां तक कि मस्जिद हराम में भी दाख़िल हो सकते हैं। अलबत्ता उन्हें वहां अपनी मुशरिकाना रस्मों के साथ हज या उमरा करने की इजाज़त नहीं। अत: लिखा है-

لِاَنّهٗ لَيسَ الْمُرادُ مِنْ آيَةِ (اِنّمَاالْمُشْرِكُوْنَ نَجَسٌ فَلَا يَقْرَبُوا الْمَسجِدَالْحَرَامَ) النَّهْىُ عَنْ دُخُوْلِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ،
وَاِنَّمَاالْمُرادُ النَّهْىُ اَنْ يَحُجَّ الْمُشْرِكُوْنَ اَوْ يَعْتَمِرُوا كَمَا كَانُوا يَعْمَلُوْنَ فِى الْجَاهِلِيّةِ

(अलफ़िक्का अल्इस्लामिया वा अदिल्लहो, लेखक डाक्टर वहब अलज़हीली भाग नम्बर 6 पृष्ठ 434-435 दारुल फ़िक्र, दमिशक़) (शेष........)

☆ ☆ ☆

LIYAKAT ALI
Ph. 9899221402
9899221457
FENLEYROSH
Fenley Rosh Healthcare Pvt. Ltd.
Frequentideas Group City Quay
Liverpool L3 4fD United Kingdom
c-5/1015.2ndfloor,
opposite CISF Group Center
New Vasant Kunj, Road, New Delhi-37
011-3231790
www.fenleyrosh.com | info@fenleyroshhealthcare.com

पेशगोई मुस्लेह मौऊद की पृष्ठभूमि

अनुवादक- सय्यद मोहियुद्दीन फ़रीद एम्. ए.

मज़हब की तारीख़ में 19 वीं शताब्दी का आख़िरी आधा भाग और 20 वीं शताब्दी का आरम्भ बड़ा ही महत्त्वपूर्ण है। यह वह समय है जबकि सारी दुनिया के बड़े बड़े धर्मों की आपस में बड़ी गंभीरता के साथ सिद्धान्तों की जंग चल रही थी दूसरी ओर नई नई शिक्षाओं तथा सभ्यताओं के जागरण के कारण धार्मिक अधार्मिक सिद्धान्त एक दूसरे पर चढ़ाई कर रहे थे। सर्वप्रथम सम्प्रदायों में ईसाइयों, मुसलमानों तथा हिन्दु मत में ख़ास तौर पर मुकाबला था। इन तीनों धर्मों की आपसी जंग के मैदान के रूप में हिन्दुस्तान बेहतरीन आखाड़ा हो सकता था और हुआ भी ऐसा ही। 19 वीं शताब्दी के आख़िरी भाग में हिन्दुस्तान में इन तीनों धर्मों के बीच सैद्धांतिक जंग ऐतिहासिक महत्त्व के रूप में लड़ी गई। इस्लाम के विरुद्ध प्रचंड व प्रबल हमले किए जाने लगे। उस समय ज़ाहिर का अनुकरण करने वाले उलमा ने बचाव के प्रयत्न किए परन्तु वे अपने उद्देश्य में कामयाब नहीं हो सके। उनका कार्य इस्लाम को और भी बदनाम करने का कारण बनता गया। नास्तिक लोगों का हौसला इस्लाम के ख़िलाफ़ इतना बढ़ गया कि वे सारी दुनिया से इस्लाम का नाम ही मिटा देना चाहते थे। इस्लाम के लिए यह दु:खों तथा परेशानियों और फ़िकरों का समय था, इसी समय अहमदियत कर नूर ज़ाहिर हुआ तथा इस्लाम की खोई हुई प्रतिष्ठा को दोबारा स्थापित करने और इस्लाम को दूसरे धर्मों पर विजयी करने के लिए क़ादियान की पवित्र बस्ती से एक महत्त्वपूर्ण जमाअत दुनिया के सामने प्रकट हुई। हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने क़ादियान की पवित्र बस्ती से घोषणा की कि :-

मैं वह पानी हूँ कि आया आसमां से वक़्त पर मैं वह हूँ नूरे ख़ुदा जिससे हुआ दिन आशकार

आप अलैहिस्सलाम के हृदय में इस बात का गहरा एहसास था कि इस युग में इस्लाम चारों ओर से दुश्मनों का निशाना बना हुआ है और मुसलमान प्रत्येक रूप से पस्ती (गिरावट) की हालत में हैं। आप ने इस बात को अपने भाषणों तथा लेखों में बड़े दु:ख दायक शब्दों में प्रकट किया। आप फ़र्माते हैं :

देख सकता ही नहीं मैं ज़ोफे दीने मुस्तफ़ा मुझ को कर ऐ मेरे सुलतां कामयाबो कामगार
या इलाही फ़ज़्ल कर इस्लाम पर और ख़ुद बचा इस शिकस्ता नाव के बन्दों की अब सुन ले पुकार

जैसे जैसे आपका दावा फैलता गया मुख़ालफ़त भी बढ़नी शुरू हो गई क्योंकि आप लोगों को इस्लाम की दावत इस बुनियाद पर देते थे कि इस्लाम एक ज़िन्दा मज़हब (धर्म) है यद्यपि करामत और मौजज़ात (चमत्कार) आज दुनिया से ख़त्म हो गए हैं लेकिन हे शंका करने वाले ! आ और मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ग़ुलामों के हाथों प्रकट होने वाले चमत्कारों और करामात को देख। जमाअत अहमदिया के संस्थापक के इस दावा पर क़ादियान के आर्यों ने अपने आपको हक़ का मुतलाशी जतलाते हुए आपकी सेवा में एक पत्र लिखा जिसमें उन्होंने एक ऐसा निशान मांगा जो अपने अन्दर अल्लाह का विशेष समर्थन और क़ुदरत नुमाई (सर्व शक्तिमान होने) का प्रमाण रखता हो और जिस से इस्लाम की सच्चाई प्रमाणित होती हो। अत: हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम इस्लाम धर्म की श्रेष्ठता और कामयाबी के लिए अति बेचैन (व्याकुलता) तमन्ना व इच्छा लिए अपने पालनहार ख़ुदा से उसकी रहमत और क़ुर्बत का निशान मांगने

की तरफ लग गए आप अलैहिस्सलाम ने इस उद्देश्य के लिए होशियारपुर के एक मकान में अकेले चालीस दिन तक एकान्त में व्यतीत किए और चालीस दिन रात इबादत और अल्लाह के समक्ष रो रो कर दुआ करते हुए अपने रब से एक ऐसे बा-कमाल पुत्र की दुआ की जो दीने इस्लाम की प्रतिष्ठा और कलामुल्लाह (क़ुर्आन) की श्रेष्ठता दुनिया पर प्रकट करने के लिए प्रत्येक आवश्यक गुणों से सम्पन्न हो और उसे दीने इस्लाम की सफल ख़िदमत (सेवा) की भरपूर तौफ़ीक पाए। आप अलैहिस्सलाम ने चालीस दिन पश्चात् चिल्लाकशी के ख़त्म होने पर इश्तिहार द्वारा यह घोषणा की, कि जो कुछ मैंने ख़ुदा से मांगा था वह उसने अपनी अथाह रहमत और अपार कृपा से मुझे देने का वादा फ़र्माया है और एक ऐसे स्वच्छ गुणों वाला एवं सम्मान जनक सुपुत्र के पैदा होने का शुभ समाचार दिया है जो अपने असाधारण गुणों और इस्लाम की महत्त्वपूर्ण सेवाओं के कारण ''ज़मीन के किनारों तक शुहरत पाएगा।" अत: 20 फरवरी 1886 ई. को एक इश्तिहार द्वारा इस महत्त्वपूर्ण पेशगोई (भविष्यवाणी) को प्रकट किया जो कि अहमदियत के इतिहास में ''पेशगोई मुस्लेह मौऊद" के नाम से जानी जाती है। वह महत्त्वपूर्ण सुपुत्र मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद ख़लीफ़तुल मसीह सानी (द्वितीय) अपने समय अनुसार भविष्यवाणी के अनुसार बयान किए गए सभी गुणों से सम्पन्न पैदा हुआ और "कलामुल्लाह" की श्रेष्ठता तथा इस्लाम धर्म की प्रतिष्ठा को दुनिया में क़ायम फ़र्माया। इस महान मुस्लेह के आने की विस्तारपूर्वक सूचना यद्यपि हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम पर प्रकट हुई। परन्तु ख़ुदाई तक़दीर के अनुसार हज़ारों वर्ष पूर्व से यह ख़बर पहली मज़हबी किताबों में पाई जाती है कि मसीह मौऊद के घर एक महान और विशेष पुत्र पैदा होगा जो शोभा व उपकार में उनके समान होगा तथा महानता व प्रतिष्ठा में उसका प्रति रूप (मसील) होगा। यहूदियों की मशहूर हदीस की किताब ''तालमूद" में लिखा है कि :- ''यह भी कहा जाता है कि मसीह मौऊद की वफात के बाद उसकी रूहानी बादशाहत उसके बेटे और पोते में चली जाएगी।" इसी प्रकार हज़रत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आने वाले महदी के बारे में यह ख़ुशख़बरी दी थी। ''यतज़व्वज़ु व यूलदु लहू" अर्थात् वह शादी करेगा और (एक विशेष) पुत्र उसको दिया जाएगा। इसके अतिरिक्त पांचवी सदी हिज्री के एक शामी बुज़ुर्ग हज़रत इमाम यहया बिन अक़्ब ने मसीह मौऊद और उसकी जमाअत के प्रति लिखा है कि :-

"व महमूदुन् सयुज़्हरू बअ्द हाज़ा
व यम्लेकुश्शामे बिला क़ितालि"

अर्थात् मसीह मौऊद के बाद महमूद प्रकट होगा जो शाम (सीरिया) को बिना किसी जंग के विजयी करेगा। इसी तरह शियों की मशहूर किताब ''बिहारूल अनवार जिल्द न: 13" में लिखा है कि आने वाले मौऊद का नाम "महमूद" होगा। इसी प्रकार हज़रत नेअमतुल्लाह वली ने अपने प्रसिद्ध फ़ारसी क़सीदा ''अरबईन फ़ी अहवालिन् महदीयीन" में फ़र्माया है :- ''जब इमाम महदी का दौर (समय) समाप्त हो जाएगा तो उसका एक विशेष पुत्र उसकी यादगार होगा।" अर्थात् मसीह मौऊद का मसील (प्रतिरूप) और उसका ख़लीफ़ा।" अत: अल्लाह तआला के कथनानुसार वह मुस्लेह मौऊद सय्यदना हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद का पवित्र वजूद क़ादियान में 12 जनवरी, 1889 ई. को पैदा हुआ तथा 52 वर्ष तक इस्लाम की प्रतिष्ठा के

लिए जमाअत अहमदिया के दूसरे ख़लीफ़ा के रूप में सेवा करते हुए 7 नवम्बर 1965 ई. को अपने पैदा करने वाले अल्लाह के पास पहुँचा। अल्लाह तआला का आप पर बेहद फज़ल हो। इस्लामी इतिहास आपकी महान सेवाओं का सदा ऋणी रहेगा।

हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु
जमाअत अहमदिया के दूसरे ख़लीफ़ा का परिचय तथा जानकारी

(नोट:- हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहिब "मुस्लेह मौऊद" के नाम से प्रसिद्ध हैं। अत: इसी नाम से यह जानकारी उपलब्ध कराई जा रही है।।)

* हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम चिल्ला कशी के लिए 22 जनवरी 1886 ई. को मुकर्रम शेख़ मेहर अली साहिब रईस होशियारपुर के मकान की ऊपर वाली मंज़िल पर ठहरे थे। इस मकान का नाम तवेला था। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने पेशगोई (भविष्यवाणी) मुस्लेह मौऊद का इश्तिहार

20 फरवरी 1886 ई. को प्रकाशित किया। पेशगोई मुस्लेह मौऊद (रज़ियल्लाहु अन्हु) का इश्तिहार हरे रंग के कागज़ पर छपा। हज़रत मुस्लेह मौऊद (रज़ियल्लाहु अन्हु) 12 जनवरी 1889 ई. को

शनिवार के दिन रात दस ग्यारह बजे के लगभग पैदा हुए। हज़रत मुस्लेह मौऊद (रज़ियल्लाहु अन्हु) का अक़ीक़ा 18 जनवरी 1889 ई. जुमअ: (शुक्रवार) के दिन हुआ। मुकर्रम हाफ़िज़ अहमदुल्लाह साहिब नागपुरी ने आप को क़ुरआन मजीद पढ़ाया। हज़रत मुस्लेह मौऊद (रज़ियल्लाहु अन्हु) की आमीन 7 जून 1897 ई. को हुई।

* हज़रत मुस्लेह मौऊद (रज़ियल्लाहु अन्हु) बचपन में एक सपना रोज़ देखा करते थे कि मैं एक फौज की कमान कर रहा हूँ।

* एक बार हज़रत मुस्लेह मौऊद (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने अपने छोटे भाई हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद (रज़ियल्लाहु अन्हु) से पूछा कि बशीर तुम बताओ विद्या अच्छी है या धन ? हज़रत मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) उस समय पास ही बैठे हुए थे, आप ने फ़रमाया "बेटा तौबा करो तौबा, न विद्या अच्छी है न धन, ख़ुदा का फ़ज़ल (कृपा) अच्छा है।"

* हज़रत मुस्लेह मौऊद (रज़ियल्लाहु अन्हु) की आमीन के समय हज़रत मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) ने एक नज़्म (कविता) लिखी उसके दो शेअर (पद्य) यह हैं :-

हमदो सना उसी को जो ज़ाते जावेदानी। हमसर नहीं है उसका कोई न कोई सानी।
बाक़ी वही हमेशा ग़ैर उसके सब हैं फानी ग़ैरों से दिल लगाना झूठी है सब कहानी।।

* हज़रत मुस्लेह मौऊद (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने 1912 ई. में हज किया।

* हज़रत मुस्लेह मौऊद 14 मार्च 1914 को जमाअत अहमदिया के दूसरे ख़लीफ़ा (उत्तराधिकारी) बने। ख़िलाफ़त के लिए आप का नाम हज़रत मौलवी सय्यद मुहम्मद अहसन साहिब अमरोही ने पेश (प्रस्तुत) किया।

* आप के तेरह बेटे थे और सब के सब इस्लाम की सेवा के लिए वक़्फ़ (समर्पित) थे।

* आपकी ख़िलाफ़त के दूसरे साल मॉरीशस में मिशन स्थापित हुआ।

* हज़रत मुस्लेह मौऊद (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने हज़रत मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) की वफात के समय आप के सिरहाना खड़े हो कर अहद (प्रण) लिया कि :-

''अगर सारे लोग भी आप को छोड़ देंगे और मैं अकेला रह जाऊँगा तो मैं अकेला ही सारी दुनिया का मुकाबला करूँगा और किसी मुख़ालफत (विरोध) और दुश्मनी की परवाह नहीं करूँगा।"

* हज़रत मुस्लेह मौऊद (रज़ियल्लाहु अन्हु) के उस्ताद (अध्यापक) निम्नलिखित हैं :-

1. हज़रत शेख़ याक़ूब अली इर्फ़ानी साहिब रज़ियल्लाहो अन्हो ।
2. हज़रत क़ाज़ी सय्यद अमीर हुसैन साहिब रज़ियल्लाहो अन्हो ।
3. हज़रत मौलाना सय्यद सरवर शाह साहिब रज़ियल्लाहो अन्हो ।
4. हज़रत मौलाना शेर अली साहिब रज़ियल्लाहो अन्हो ।
5. हज़रत मास्टर अब्दुल रहमान साहिब रज़ियल्लाहो अन्हो ।
6. हज़रत मुफ्ती मुहम्मद सादिक़ साहिब रज़ियल्लाहो अन्हो ।
7. मास्टर फ़क़ीरुल्लाह साहिब रज़ियल्लाहो अन्हो ।

* हज़रत मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) का इल्हाम ''ताई आई" मार्च 1916 ई. में पूरा हुआ जब आप के ताया मिर्ज़ा ग़ुलाम क़ादिर साहिब की पत्नि ने हज़रत मुस्लेह मौऊद (रज़ियल्लाहु अन्हु) के हाथ पर बैअत की।

* 1919 ई. में आपने यतीम ख़ाना स्थापित किया।

*1924 ई. में आप लंदन ''वैम्बले कान्फ्रेंस" में शामिल हुए जिस में आप का मज़मून ''अहमदियत अर्थात वास्तविक इस्लाम" सर मुहम्मद ज़फ़रुल्लाह ख़ान साहिब (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने पढ़ा।

* पेशगोई ''वह तीन को चार करने वाला होगा" आपके बड़े भाई मिर्ज़ा सुल्तान अहमद साहिब द्वारा आपके हाथ पर 1930 ई. में बैअत करने से पूरी हुई।

* आपने 1934 ई. में तहरीक जदीद की स्थापना की। पहले पहल तीन साल के लिए यह तहरीक फ़रमाई फिर हमेशा के लिए कर दी। इसके द्वारा हिन्दुस्तान और पाकिस्तान से बाहर विदेशों में इस्लाम का प्रचार (तब्लीग़) किया जाता है।

* हज़रत मुस्लेह मौऊद (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने जमाअत को पांच ज़ैली तन्ज़ीमों में विभाजित किया :

1. मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया । (15 से 40 साल तक के नौजवान पुरुष, स्थापना 4 फरवरी 1938 ई.)
2. मज्लिस अंसारुल्लाह (40 साल से ऊपर के पुरुष)
3. मज्लिस अत्फालुल अहमदिया। (7 से 15 साल तक के बच्चे यह मज्लिस ख़ुद्दाम के साथ मिलकर काम करती है)
4. लज्ना इमाइल्लाह। (15 साल से ऊपर की महिलाएं, स्थापना 25 दिसम्बर 1922 ई.)
5. मज्लिस नासिरातुल् अहमदिया (15 साल तक की बच्चियां)

शेष पृष्ठ 32 पर

कुछ नादानों द्वारा किए गए ऐतराज़ों के उत्तर

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब, मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के अपने शब्दों में

अनुवादक- फ़रहत अहमद आचार्य

और उनका एक ऐतराज़ यह है कि वे कहते हैं कि अगर यह वही मसीह है जो सलीब तोड़ने तथा सूअरों का वध करने के लिए भेजा गया है तो उस पर शताब्दी के आरंभ से 11 वर्ष बीत चुके हैं तो कौन सी सलीब तोड़ी गई और कौन से सूअर का वध किया गया? और कौन सा टैक्स हटाया गया और कौन है जिसने काफ़िरों के मार्गों को छोड़ा और इस्लाम में प्रवेश किया?

इसका उत्तर यह है कि तू जान ले कि सच्चाई (का प्रभुत्व) यकायक नहीं आया करता बल्कि धीरे-धीरे आता है और ऐनी (उमदतुलक़ारी फी शरहिल बुख़ारी) में इब्ने अब्बास से रिवायत है कि ईसा अलैहिस्सलाम 19 साल रहेंगे। और वह न तो अमीर होंगे, न निर्णायक और न ही राजा। और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर मक्का में 13 साल का समय बीता और इस अवधि में आपके साथ कमज़ोरों का केवल एक छोटा सा समूह सम्मिलित हुआ था। और तौरात में लिखी हुई हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की कुछ निशानियों में से रोम, सीरिया और फारस के इलाकों का विजय होना था, परन्तु यह (विजय) लोगों ने आपके जीवनकाल में नहीं देखी और न ही क़ौमों तथा देशों के बड़े-बड़े समूहों ने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के स्वर्गवास के बाद आपका अनुसरण किया। बल्कि आप ने अपने प्रारंभिक समय में मुसीबतों पर मुसीबतों के सिवा कुछ नहीं देखा और जो लोग आप पर ईमान लाते थे उन्हें भी क़ौम ने बहुत कष्ट दिए। उन पर आरोप लगाए, उन्हें धुत्कारा और उनके विरुद्ध झूठ बोलते हुए हर प्रकार की उपद्रवपूर्ण बातें की और इसी प्रकार समस्त नबी धुत्कारे गए और उनको उनके जीवनकाल के प्रारंभ में दुख और कष्ट पहुंचे और इस कठिनाई पर एक लंबा समय बीत गया यहां तक कि वे "मता नसरुल्लाह" (अर्थात अल्लाह की सहायता हमारे पास कब आएगी) पुकार उठे। फिर (ऐसा हुआ कि) जो नष्ट होने वालों में से थे वे नष्ट हो गए जैसा कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया -

اَمۡ حَسِبۡتُمۡ اَنۡ تَدۡخُلُوا الۡجَنَّۃَ وَ لَمَّا یَاۡتِکُمۡ مَّثَلُ الَّذِیۡنَ خَلَوۡا مِنۡ قَبۡلِکُمۡ ؕ مَسَّتۡہُمُ الۡبَاۡسَآءُ وَ الضَّرَّآءُ وَ زُلۡزِلُوۡا حَتّٰی یَقُوۡلَ الرَّسُوۡلُ وَ الَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا مَعَہٗ مَتٰی نَصۡرُ اللّٰہِ ؕ اَلَاۤ اِنَّ نَصۡرَ اللّٰہِ قَرِیۡبٌ۔ (अल बक़र: - 2/215)

(अनुवाद- क्या तुम यह समझते हो कि तुम जन्नत में प्रवेश कर जाओगे जबकि अभी तक तुम पर उन लोगों जैसे हालात नहीं आए जो तुमसे पहले गुज़र चुके हैं। उन्हें कठिनाइयां और कष्ट पहुंचे और वह हिला कर रख दिए गए यहां तक कि रसूल और वे जो उसके साथ ईमान लाए थे, पुकार उठे कि अल्लाह की सहायता कब आएगी। अल बक़र: - 2/215) इसी प्रकार इस समय के लोग चाहते हैं कि मेरा वध करें या मुझे सूली पर लटका दें या मुझे किसी अंधे कुएं में डाल दें और सच्चाई को अपने पैरों तले रौंद डालें। और हरे-भरे वृक्षों को उसी प्रकार जला दें जैसे सूखी घास को जला दिया जाता है। तो अल्लाह ही है जिससे उनके षड्यंत्रों के विरुद्ध सहायता मांगी जा सकती है और वही सबसे श्रेष्ठ सहायता करने वाला है। और उसकी वह सहायता जिसका वे इन्कार करते हैं, वह एक ऐसी चीज़ है कि शीघ्र ही तू वह कुछ देखेगा जिसे तू सुनता नहीं, बल्कि उसकी निशानियां देखने वालों

की निगाहों में प्रकट हो गई हैं।

क्या तू नहीं देखता कि ज़माना कैसे एकेश्वरवाद की ओर पलट गया है और किस तरह इस्लाम की हवाएं मुश्रिकों के देशों में चल पड़ी हैं और किस प्रकार लोग अल्लाह के धर्म में हर देश से फौज की फौज प्रवेश कर रहे हैं। अतः यह वही नूर है जो आसमान से उस व्यक्ति के साथ उतरा जो लोगों के सुधार के लिए अवतरित किया गया। यदि तू इंसाफ करने वालों में से है तो बता कि इससे अधिक स्पष्ट दलील और कौन सी हो सकती है? हे नादान! उठ और आंख खोल ताकि तू देखे कि आसमानी हथियार से किस प्रकार सलीब तोड़ी जा रही है और सूअरों का वध किया जा रहा है। जहां तक लोगों को इस संसार के हथियारों से मारने का संबंध है तो यह कोई विचित्र बात नहीं। क्या राजा ऐसा नहीं किया करते? अतः तू अल्लाह के हथियार को तलाश कर और इन्कार करने वालों में से न बन।

और मैंने अभी वर्णन किया है कि दज्जाल ही शैतान होगा जो उन लोगों के दिलों में भ्रम उत्पन्न करेगा जो उसका अनुसरण करेंगे। अतः इस प्रकार वह उसके लिए उसके सहायक बन जाएंगे और उनका कर्म उस शैतान का कर्म हो जाएगा। तब उस ज़माने में मसीह मौऊद आकाशीय हथियार के साथ अवतरित होगा। फिर वह शैतान का वध करेगा और उसके सूअरों का भी वध करेगा और क़ुरआन ने विभिन्न स्थानों पर इस की ओर संकेत किया है और यह भी संकेत किया है कि वह अंतिम युग में विजय प्राप्त करेगा। तो जिन लोगों पर शैतान अवतरित होगा वह धरती में उपद्रवी बनकर उपद्रव करेंगे और हर ऊंचाई को फलांगेंगे। फिर अल्लाह अपने बन्दों को आकाशीय बिगुल फूंक कर सच्ची बात पर इकट्ठा करेगा और यह रब्बुल आलमीन की ओर से निर्धारित नियति है।

यह अल्लाह तआला के भेदों में से एक भेद और उसकी सुन्नतों में से एक सुन्नत है कि जब वह लोगों के दिलों पर शैतानी प्रभुत्व के समय उनके सुधार का इरादा करता है तो वह रूहुल क़ुदुस (जिब्राईल) को अपने बंदों में से एक बंदे के दिल पर उतारता है और उसके साथ फ़रिश्ते होते हैं। अतः फ़रिश्ते हर ओर से उतरते हैं और उसके बन्दों को यह वह्यी करते हैं कि उठो और सच्चाई को स्वीकार करो। फिर वह उनके पास आते

Sayed K. A. Rihan, M.B.A.
Proprietor
Tel: 9035494123/9740190123

B.M.S.ENTERPRISES
INDUSTRIAL UTILITY SOLUTIONS

21, Erannappa Layout Ambadkar Main Road,
Mahadevapura, Bangalore - 560 048
E-mail: bmsentrprises@gmail.com

जमाअत को नसीहत

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं- ''मैं अपनी जमाअत को नसीहत करता हूँ कि अहंकार से बचो क्योंकि अहंकार हमारे प्रतापी ख़ुदा के नेत्रों में अत्यन्त घृणित कार्य है किन्तु तुम कदाचित् नहीं समझोगे कि अहंकार क्या चीज़ है? अतः मुझ से समझ लो कि मैं ख़ुदा की आत्मा से बोलता हूँ।''

(नुज़ूलुल मसीह पृष्ठ-402)

हैं और उन्हें सच्चाई को स्वीकार करने तथा कठिनाइयों को बर्दाश्त करने का सामर्थ्य देते हैं। और यह तहरीकें केवल किसी रसूल, नबी या मुहद्दस के प्रादुर्भाव के समय ही प्रकट होती हैं। परन्तु मूर्ख लोग इस भेद को नहीं पहचानते जिससे हिदायत की हवाएं चलती हैं और उसके बारे में ठोकर खाते हैं और उन्हें संयोग समझते हैं और इस बात पर विचार-विमर्श नहीं करते कि अल्लाह ने हर चीज़ के लिए एक कारण बनाया है और इस संसार मैं प्रत्येक सक्रिय चीज़ के लिए कोई प्रेरक है। ये वही लोग हैं जिनके प्रयत्न इस सांसारिक जीवन में व्यर्थ गए और वे सतही विचारों पर प्रसन्न हुए और विचार-विमर्श करने वालों में से न हुए।

और वास्तविकता यह है कि फ़रिश्ते का मनुष्य के दिल के साथ एक गहरा संबंध होता है और शैतानों का भी संबंध होता है। अत: जब अल्लाह किसी नबी या रसूल या मुहद्दस को सुधारक बनाकर अवतरित करने का इरादा करता है तो वह फ़रिश्ते के संबंध को मज़बूती देता है और लोगों की योग्यताओं को सत्य के स्वीकार करने के निकट कर देता है और उनको बुद्धि, विवेक, साहस और कठिनाइयां सहन करने की शक्ति और क़ुरआन की समझ का नूर प्रदान करता है जो उस सुधारक के प्रादुर्भाव से पूर्व उन्हें उपलब्ध नहीं होता। अत: दिमाग साफ हो जाते हैं और बुद्धि मज़बूत हो जाती हैं और साहस बुलंद हो जाते हैं और हर एक ऐसा आभास करता है कि मानो उसे उसकी नींद से जगा दिया गया है। और उसके दिल पर परोक्ष से नूर उतर रहा है और एक उपदेशक उसके अंतर्मन में खड़ा हो गया है। और लोग ऐसे हो जाते हैं कि मानो अल्लाह ने उनके स्वभाव और मिजाज़ को बदल डाला है और उनके दिमाग़ तथा विचारों को तेज़ कर दिया है। अत: जब यह सब लक्षण प्रकट और इकट्ठे हो जाएं तो वह इस बात की अकाट्य दलील होती है कि मुजद्दिद-ए-आज़म प्रकट हो गया है और अवतरित होने वाला नूर उतर चुका है। और इसी की ओर अल्लाह तआला ने सूर: क़द्र में संकेत फ़रमाया है -

اِنَّآ اَنۡزَلۡنٰهُ فِیۡ لَیۡلَۃِ الۡقَدۡرِ ۔ وَ مَاۤ اَدۡرٰىکَ مَا لَیۡلَۃُ الۡقَدۡرِ ۔ لَیۡلَۃُ الۡقَدۡرِ ۬ۙ خَیۡرٌ مِّنۡ اَلۡفِ شَهۡرٍ ؕ
تَنَزَّلُ الۡمَلٰٓئِکَۃُ وَ الرُّوۡحُ فِیۡهَا بِاِذۡنِ رَبِّهِمۡ ۚ مِنۡ کُلِّ اَمۡرٍ ۔ سَلٰمٌ ۛ۟ هِیَ حَتّٰی مَطۡلَعِ الۡفَجۡرِ ۔

(अल क़दर - 97/2-6)

(अनुवाद- निश्चय ही हमने उसे क़द्र (नियति) की रात में उतारा है और तुम्हें क्या समझाएं कि क़द्र (नियति) की रात क्या है? क़द्र (नियति) की रात हज़ार महीनों से बेहतर है। बहुत से फ़रिश्ते और पवित्र आत्मा अपने रब की आज्ञा से उसमें उतरते हैं। हर मामले में, शांति है। यह (श्रृंखला) भोर तक जारी रहती है।)

और तू जानता है कि फ़रिश्ते और जिब्राईल केवल सच्चाई के साथ ही उतरते हैं और अल्लाह की शान इससे बुलंद है कि वह उन्हें निरर्थक और बेफायदा भेजे। अत: जिब्राईल के भेजने से यहां किसी नबी या रसूल या मुहद्दस के अवतरण की ओर संकेत है कि यह रूह उस पर डाली जाती है और फ़रिश्तों के भेजने से ऐसे फ़रिश्तों के उतरने की ओर संकेत है जो लोगों को सच्चाई, हिदायत, दृढ़ता और डटे रहने की ओर प्रेरित करते हैं जैसा कि अल्लाह तआला ने एक दूसरे स्थान पर फ़रमाया है-

اِذۡ یُوۡحِیۡ رَبُّکَ اِلَی الۡمَلٰٓئِکَۃِ اَنِّیۡ مَعَکُمۡ فَثَبِّتُوا الَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا

(अनुवाद- (याद कर) जब तेरा रब फ़रिश्तों की ओर वह्यी कर रहा था कि मैं तुम्हारे साथ हूं। अत: तुम उन लोगों को जो ईमान लाए हैं, दृढ़ता प्रदान करो। (अंफाल- 8/13) अर्थात तुम उनके दिलों में उतरो और

उनके लिए ईमान, दृढ़ता और डटे रहने को प्रिय बना दो। और जब फ़रिश्ते उतरते हैं तो उनका यही कर्म होता है। अत: सूरत क़द्र में इस ओर संकेत है कि अल्लाह ने इस उम्मत से वादा किया है कि वह उन्हें व्यर्थ नहीं जाने देगा बल्कि जब भी वह गुमराह हो जाएंगे और अंधेरों में गिर जाएंगे तो लैलतुल क़द्र उन पर आएगी और रूहुल कुदुस (जिब्राईल) धरती पर उतरेगा अर्थात अल्लाह उसे अपने बंदों में से जिस पर चाहेगा उतारेगा और उस बंदे को मुजद्दिद बनाकर अवतरित करेगा और जिब्राईल के साथ अन्य फ़रिश्तों को भी उतारेगा जो लोगों के दिलों को सच्चाई और हिदायत की ओर प्रेरित करेंगे। फिर यह सिलसिला क़यामत तक निरंतर चलता रहेगा। अत: तलाश करो तो पा लोगे और खटखटाओ तो तुम्हारे लिए खोला जाएगा। और यह ज़माना वह है कि जिस में शारीरिक नेमतों और नई उन्नतियों के द्वार खुल गए हैं। और तुम अपनी सवारियों, अपने वस्त्रों में और अपनी सभ्यता के विभिन्न प्रकारों में नई-नई नेमतें देख रहे हो और भौतिक विज्ञान, गणित और मनोविज्ञान के बहुत से सूक्ष्म ज्ञान प्रकट हो चुके हैं और हम दुनिया वालों को आधुनिक विज्ञान में इसी प्रकार उन्नति करते पाते हैं कि मानो वे आसमान की तरफ बुलंद हो रहे हैं और ऐसी चीज़ें देख रहे हैं कि जिन से बुद्धि चकित रह जाती हैं। और उल्लेख (उद्धरण) उससे पीछे रह जाते हैं। और हम हर ओर नए आविष्कार और नई कलाएं और अजीब और जटिल कार्य खुले-खुले जादू के समान देखते हैं। और हम इन आविष्कारों का कोई निशान पहले लोगों में नहीं पाते, मानो धरती किसी और धरती से बदल गई है। और जब यह सिद्ध हो गया कि धरती में आधुनिक विज्ञान और नए-नए अध्यात्मज्ञान छुपे हुए हैं और अल्लाह ने सांसारिक ज्ञान के पर्दों को अपनी क़ुदरत से फाड़ दिया है तो फिर तू आसमान के फट जाने पर क्यों आश्चर्य करता है। और मेरे रब ने मुझे इल्हाम किया है और फ़रमाया है कि- اَنَّ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ كَانَتَا رَتْقًا فَفَتَقْنٰهُمَا अर्थात आसमान और धरती दोनों बंद थे, तो हमने इन दोनों को खोल दिया फिर तू इस भेद को समझ और रब्बुल आलमीन (समस्त ब्रह्मांड के रब) की रहमत से निराश न हो।

और तू देख रहा है कि इस ज़माने के निम्न से निम्न असहाय व्यक्ति को भी वह नेमतें उपलब्ध हैं जो उसके बाप-दादों में से किसी ने बल्कि पहले राजाओं और (हज़रत) सुलेमान ने भी समस्त शानो शोकत के बावजूद नहीं देखी थीं। अत: जब अल्लाह ने अपनी भौतिक नेमतों के साथ अपने बंदों पर उपकार किया है तो तुम कैसे समझते हो कि उसने उन्हें अपनी आध्यात्मिक नेमतों से वंचित रखा होगा। अत: तू इस पर खूब विचार कर जो हमने तुझे विस्तार पूर्वक बताया है और अल्लाह तथा अल्लाह वालों से क्षमा याचना कर यदि तू परहेज़गारों में से है। अत: हे जल्दबाज़ो! सब्र करो यहां तक कि अल्लाह अपना निर्णय कर दे। तुम्हें क्या हो गया है कि तुम उन उपद्रवों की ओर नहीं देखते जो तुम्हारे बीच बहुत बढ़ गए हैं और अल्लाह मोमिनों को उनके इस हाल पर जिस हाल पर वे अब हैं, छोड़ने वाला नहीं है यहां तक कि वह अपवित्र को पवित्र से अलग कर दे। अत: तुम ख़ुदा के दिनों के आने से निराश न हो क्योंकि वह सबसे बढ़कर रहम करने वाला है। **(....शेष)**

{हमामतुल बुश्रा (हिन्दी) पृष्ठ- 205-211}

☆ ☆ ☆

सामान्य ज्ञान (गूगल के सौजन्य से)

Q1. अखिल भारतीय ट्रेड यूनियन कांग्रेस के प्रथम अध्यक्ष कौन थे?

उत्तर: लाला लाजपत राय

Q2. इनमें से किस एकमात्र भारतीय को अर्थशास्त्र में नोबेल पुरुस्कार मिला है?

उत्तर: ख. अमर्त्य सेन

Q3. मानव शरीर के किस अंग द्वारा यूरिया को रक्त से फ़िल्टर किया जाता है?

उत्तर: किडनी

Q4. भारत के पहले मुस्लिम राष्ट्रपति कौन थे?

उत्तर: जाकिर हुसेन

Q5. इनमें से किसने कुतुबमीनार का निर्माण शुरू करवाया था?

उत्तर: क़ुतुबुद्दीन ऐबक

Q6. इनमें से किस वर्ष दिल्ली में ख़िलजी शासन शुरू हुआ था?

उत्तर: 1290

Q7. दिल्ली और उसके आसपास के शहरी क्षेत्र को सन 1991 में राष्ट्रिय राजधानी क्षेत्र का दर्जा संविधान के किस संसोधन से मिला ?

उत्तर: 69 वां संसोधन कानून

Q8. अंग्रेज पुलिस अफसर कैप्टन सांडर्स को किसने गोली मारी थी?

उत्तर: भगतसिंह

Q9. 'अनहैप्पी इण्डिया' के लेखक कौन हैं?

उत्तर: लाला लाजपत राय

Q10. भारत ने किस राष्ट्र के साथ अपराधों और मानव तस्करी की रोकथाम में सहयोग के लिए समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किया है?

उत्तर: कंबोडिया

Q11. राष्ट्रीय लघु उद्योग निगम (एनएसआईसी) ने हाल ही में एस.एम.ई निगम के साथ एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं?

उत्तर: मलेशिया

Q12. इनमें से कौन सा देश वैश्विक सूचकांक में सबसे ऊपर है और विश्व आर्थिक मंच (डब्ल्यूईएफ) की वार्षिक बैठक भी इसी देश में हुई है?

उत्तर: स्विट्जरलैंड

Q13. सऊदी अरब ने किस देश को सहायता के लिए 1.5 अरब अमरीकी डालर की घोषणा की है?

उत्तर: यमन

إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّهُ كَانَ بِعِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا
(سورہ بنی اسرائیل، آیت 31)
LUCKY BATTERY CENTRE
BATTERY & DIGITAL INVERTER
Thana Chhak, NH-5 Soro
Balasore, Odisha
Pin 756045
e-mail : abdul.zahoor786@gmail.com
Mob. : 09438352786, 06788221786

إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّهُ كَانَ بِعِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا
(سورہ بنی اسرائیل، آیت 31)
Prop.
Sk. Riyazuddin
Moblie: 9437188786
9556122405
KING TENT HOUSE
At. Ashram Chak, P.O. Soro, Distt. Balasore, ODISHA

يُنْبِتُ لَكُمْ بِهِ الزَّرْعَ وَالزَّيْتُونَ وَالنَّخِيلَ وَالْأَعْنَابَ وَمِنْ كُلِّ الثَّمَرَاتِ ۗ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لِقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ
(النحل ۱۱)
Prop : Sk. Ishaque
Phangudubabu : 7873776617
Papu : 9337336406
Lipu : 9778116653
FFT Fruits
FAIZAN FRUITS TRADERS
Near Railway Gate, Soro, Balasore, Odisha - 756045
PAPU LIPU ROAD WAYS
All India Truck Supplier
Papu : 9337336406, Lipu : 9437193658, 9778116653,

Sayed Wasim Ahmad
Mobile
09937238938
محبت سب کے لئے نفرت کسی سے نہیں
PRAN
MANGO JUICEPAK
Marie
RUKSAR AGENCY
Pran Juice, Gandour Food Products,
Monginis Cake, Raja Biscuit etc.
Mubarakpur, At. Soro,
Distt. Balasore (Odisha)

R
REHAN'S
REHAN INTERNATIONAL
WE ARE ON
snapdeal
flipkart
amazon.com
paytm
Ph: 7702857646
rehaninternational@gmail.com
We accept All Debit & Credit Cards

Urfan Ahmed Saigal
9550147334
deco.leathers@gmail.com
DECO
DL
LEATHERS
Genuine Quality
We Undertake Complimentary Orders Also
Manufacture
Address: 1/1/129, Alladin Complex 72, SD Road
Clock Tower, Beside Kamat Hotel, Secunderabad-3

LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE

SAKTI BALM

INDICATION: SHAKTI BALM GIVES RELIEF FROM STRAINS CUT, LUMBAGO COUGHS, COLD, HEADACHE AND OTHER ACHESAND PAINS FOMENTATION OF THE AFFECTED PART HELPS TO RELIFE PAIN QUICKLY.

AYURVEDIC PAIN BALM

Prop: SK.HATEM ALI

ALL INDIA AVAILABLE

SOUTH 24 PARGANA, DIAMOND HARBOUR, WEST BENGAL

LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE

RSB Traders & whole seller

Specialist in Teddy Bear Ladies & Kids items, All Types of Bags & Garments items

Mob: 9647960851
9082768330

Branch: Aroti Tola Po muluk
Bolpur-Birbhum
Head office: Q84 Akra Road
Po.Bartala, Kolkata-18

INDIA MOVES ON EXIDE

M.S.AUTO SERVICE
2-423/4 Bharath Building
Railway Station Road Kacheguda,
Hyderabad.500027(T.s)

Cell :9440996396,9866531100

Fawad Anas Ahmed

GOLDEN GROUP REAL ESTATE

LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE

दुआओं का आवेदक

DISTT. YADGIR - 585 201
KARNATAKA
Ph. : 9480172891

METRO PLASTIC PRODUCTS

YUBA

QUALITY FOOTWEAR

E-mail:yuba.metro@yahoo.com

{AN ISO 9001:2008 CERTIFIED COMPANY}

H.O & FACTORY : 20 A RADHANATH CHOUDHURAY ROAD
KOLKATA700015,PH:2328-1016

☎ : 06784-230727
Mob. : 9437060325

Is Allah not sufficient for His servant

JANATA
STONECRUSHINGINDUSTRIES

Mfg. :
Hard Granite Stone, Chips, Boulder etc.

LOVE FOR ALL
HATRED FOR NONE

At - Tisalpur, P.O. - Rahanja,
Distt. - Bhadrak - 756 111

Mob. 9934765081

Guddu Book Store

All type of books N.C.E.R.T, C.B.S.E & C.C.E are available here. Also available books for childrens & supply retail and wholesale for schools

Urdu Chowk, Tarapur, Munger, Bihar 813221

NASIR MAHMOOD
Ph. : 9330538771
7686979536

MANUFACTURER and WHOLE SELLER

Leather Wallats, Jackets, Ladies Bag, Port Folio Bag, Key Chain, Belts etc.

70D Tiljala Road, Kolkata - 700046
e-mail : nasirmahmood.125@gmail.com

LOVE FOR ALL
HATRED FOR NONE

Cell
9423805546 / 9960071753
9420399786 / 2363271443

Prop.
Hameed Khan Beejali

Creative Computers

Durwankur, Appt. 05, Old, Shiroda Naka,
Tal. Sawantwadi, Distt. Sindhudurg, Maharashtra - 416510

Ziyafat Khan

Mobile
09937845993

Love For All Hatred For None

दुआओं का आवेदक

WASIMA STONE CRUSHER

Pankal, Near Nuapatna Town,
Distt. Cuttack (Odisha)

إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّهُ كَانَ بِعِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا

Mob. : 09986670102
09036915406

Prop.
Fazal-e-Haq
Eajaz-ul-Haq
Anwar-ul-Haq
Rizwan-ulHaq

Al-Fazal Garments

Specialist in : School Uniform, Tai, Belt, Jeans, T-Shirts, Shirts etc.

Opp. Krishna Gramina Bank, Beside Sana Medical,
Main Road, Yadgir, Karnataka

पत्रिका के बारे में अपनी राय (Feedback) अवश्य दें

प्रिय पाठको! धार्मिक भेद-भाव तथा धर्मों के बीच पनप रही नफरत के वर्तमान परिदृश्य में पत्रिका "**राहे ईमान**" के द्वारा हम निरंतर इस्लाम की वास्तविक तथा मौलिक शिक्षाओं से आपको अवगत कराने का प्रयास कर रहे हैं। इस पत्रिका को पढ़कर आपको कैसा लगा, हमारे संपादकीय मंडल की ओर से जो लेख इस पत्रिका में प्रकाशित किए जाते हैं उनके प्रति आपकी क्या राय है? यह हमें अवश्य बताएं। आपका **फ़ीडबैक (प्रतिक्रिया)** इस पत्रिका को लाभदायक तथा ज्ञानवर्धक बनाने में हमारी सहायता करेगा।

यदि आपके पास कोई ऐसा सुझाव हो जो इस पत्रिका को और भी बेहतर बना सकता है तो खुद्दामुल अहमदिया भारत (जमाअत के अंतर्गत नौजवानों की संस्था) आपके सुझाव का स्वागत करती है। हमारा इस पत्रिका को बेहतर से बेहतर तथा ज्ञान वर्धक एवं ईमान वर्धक बनाने का प्रयास निरन्तर जारी है। इसके अतिरिक्त भी यदि पत्रिका से संबंधित और भी कोई सुझाव या परामर्श आप हमें देना चाहते हैं तो उसका हृदय से स्वागत है।

आप अपना फ़ीडबैक हमें मज्लिस खुद्दामुल अहमदिया भारत की ईमेल आईडी पर भिजवा सकते हैं और एडिटर या मैनेजर को फोन भी कर सकते हैं :-

Email id- khuddam@qadian.in

Manager- 98156-39670, Editor- 91150-40806

पृष्ठ 23 का शेष

* आप ने मुस्लेह मौऊद होने का दावा 20 फरवरी 1944 ई. को किया।

* आप ने दुश्मनों के ऐतराज़ (आपत्तियों) के जवाब में सबसे पहली किताब ''सादिक़ों (सच्चों) की रोशनी को कौन दूर कर सकता है" लिखी।

* आप की ख़िलाफ़त पर 25 साल पूरे होने पर 1939 ई. में ख़िलाफ़त जुबली मनाई गई।

* 1940 ई. में आपने 'हि जरी शम्सी " कैलेन्डर जारी किया।

* हज़रत मुस्लेह मौऊद (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने 31 अगस्त 1947 ई. को क़ादियान से हिजरत की और 1948 ई. में आप में 'रबवाह" मर्क़ज़ी (सेंटर) की स्थापना की।

* 1954 ई. में आप मस्जिद मुबारक रब्वाह में अस्र की नमाज़ पढ़ा कर वापस आ रहे थे कि एक दुश्मन ने आप पर चाकू से हमला कर दिय ा।

* हज़रत मुस्लेह मौऊद (रज़ियल्लाहु अन्हु) की वफात नवम्बर 1965 ई. की रात दो बजे हुई और आप का मज़ार (क़ब्र) बहिश्ती मकबरा रब्वाह पाकिस्तान में है।

☆ ☆ ☆